॥ राधास्वामी दयाल की दया ॥

राधास्वामी सहाय ।

॥ शब्द प्रेम आरती

शब्द १ (प्रे० भा० २)

छबीले छबि लगे तोरी प्यारी ॥ टेक ॥

दर्शन कर मोहित हुई छिन में, मुखड़े पर मैं वारी ॥ १ ॥

अचरज दरस दिखाया मुझ को, चरनन पर बलिहारी ॥ २ ॥

राधास्वामी अंग लगाओ मेहर से, तन मन से कर न्यारी ॥३॥

शब्द २ (प्रे० बा० २)

रसीले छोड़ो अमृत धारा ॥ टेक ॥

यह धारा दस द्वार से उठती, भींजे तन मन सारा ॥ १ ॥

यह धारा झनकार सुनावत, भिन्न भिन्न धुन न्यारा ॥ २ ॥

यह धारा बिन भाग न मिलती, पावे कोइ गुरु का प्यारा ॥३॥

राधास्वामी प्यारे दीन दयाला, मोहिँ लीना सरन सम्हारा ॥४॥

शब्द ३ (मे० वा० ३)

दरस देव प्यारे, अब क्यों देर लगइयाँ हो ॥टेक॥

परथम जब मोहिँ दरशन दीने, मन और वुध मेरे हर लीने ।
विरह अगिन हिये में धर दीने, सुलगत नित्त तपइयाँ हो ॥१॥

वचन सुना मेरी प्रीत बढ़ाई, शब्द लखा परतीत दृढ़ाई ।
करम भरम सब दूर हटाई, घट में कार कमइयाँ हो ॥२॥

शब्द रूप की सुन सुन महिमा, घट में जागी उमँग नवीना ।
रैन दिवस नहिँ पाऊँ चैना, मीना सम जल बिन तड़पइयाँ हो ॥३॥

राधास्वामी सतगुरु पिता हमारे, जियत रहूँ उन चरन अधारे ।
मेहर से लिया मोहिँ आप सम्हारे, उन चरनन पर बल बल
जइयाँ हो ॥४॥

शब्द ४ (प्रे० बा० ४)

आज सतसँग गुरु का कीजे, दीखे घट बिमल बिलासा ॥टेक॥
यह जगत जाल दुखदाई, क्यों या में बैस बिताई ।
ले सतगुर की सरनाई, धर राधास्वामी चरनन आसा ॥१॥

गुरु वचन चित्त मेँ धरना. सुन शब्द कमाई करना ।
मन माया से नित लड़ना, तब देखे अजब तमाशा ॥२॥
गुरु चरनन प्रीत चढ़ाना, मन सूरत अधर चढ़ाना ।
राधास्वामी सरन समाना, तब पावे निज घर वासा ॥३॥
गुरु दया संग ले भाई, गगना मेँ पहुँची धाई ।
फिर सच्च नाम पद पाई, किया राधास्वामी चरन निवासा ॥४॥

शब्द ५ (प्रे० बा० ४)

मेरे तपन उठत हिये भारी, गुरु प्रेम की बरखा कीजे ॥टेक॥
बिरह अगिन सुलगत नित घट में, कस निरखूँ छबि तिल पट में।
मेरी उमर गई खट पट में, अब तो गुरु दरशन दीजे ॥१॥
बिन दर्शन जिया घबरावे, जग भोग नहीं अब भावे।
कोइ बात न मोहिं सुहावे, अस काया छिन छिन छीजे ॥२॥
गुरु मेहर करो अब भारी, देव चरनन प्रीत करारी।
तुम दर्शन नित्त निहारी, तब सुरत प्रेम रँग भीजे ॥३॥

तुम राधास्वामी समरथ दाता, मुझ को भी करो सनाथा ॥
तुमं चरन रहूँ रस राता, मेरी सुरत सरन में लीजे ॥४॥

शब्द ६ (प्रे० बा० ४)

सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी, आज प्रेम रंग बरसाय रहेरी ॥टेक॥
अनुरागी जन जुड़ मिल आये, बहुविधि विनती लाय रहेरी ॥१॥
प्रेमदान दीजे गुरु प्यारे, सब मन में तरसाय रहेरी ॥२॥

सुन बिनती प्यारे राधास्वामी दाता, घट में सुरत चढ़ाय रहेरी ॥३

मगन होय सुन नइ धुन घट में, धन धन राधास्वामी गाय रहेरी ४

शब्द ७ (प्रे० बा० ४)

मन चंचल चहुँ दिस धाय सखी मैं नहिं जाने दूँगी ॥टेक॥

गुरबल हियरे धार बिघन कोई नहिं आने दूँगी ॥१॥

माया भोग दिखाय लुभावत जीवन को जग में ॥

मैं गुरुनाम अधार दाव वाहि नहिं पाने दूँगी ॥२॥

मन है बड़ा गँवार करे नहिँ चरनन विसवासा ॥
मैँ गुर टेक सम्हार भरम कोइ नहिँ लाने दूँगी ॥३॥
गुरु का ध्यान सम्हार चरन मेँ मन को साध रहूँ ॥
विन राधास्वामी नाम और कुछ नहीँ गाने दूँगी ॥४॥

शब्द ८ (प्रे० वा० ४)

आज गुरु प्यारे के चरनोँ मे झलकती है अजब मेँहदी की लाली।
देखो गुरु प्यारे के चरनोँ मेँ अजब मेँहदी की लाली ॥

हाथ भी सुर्ख़ हैं और मुखड़े की छवि देखी निराली ॥१॥
हार और फूल लिये आती हैं सखियाँ घर से ।
मेंहदी हाथों में लगाती हैं सरच सूरत वाली ॥२॥
लाल रंग छाय रहा गुरु के महल में चहुँ दिस ।
देख परकाश तले रह गई माया काली ॥३॥
स्रुत बच्ची का मिला भाग से गुरु बच्चे से जोड़ा ।
राधास्वामी की दया पाय के निज घर चाली ॥४॥

शब्द ८ (प्रे० बा० २)

सुरतिया गाय रही, नित राधास्वामी नाम दयाल ॥१॥
नाम बिना कोइ ठौर न पावे, नाम बिना सब बिरथा घाल ॥२॥
नामहि से नामी को लखिये, नाम करे सब की प्रतिपाल ॥३॥
नाम कहो चाहे शब्द बख़ानो, शब्द का निरखो नूर जमाल ॥४॥
राधास्वामी शब्द खोजती चाली, सुन सुन धुन अब हुई निहाल ५

शब्द १० (प्रे० बा० २)

सुरतिया खिलत रही, गुरु अचरज दरसन पाय ॥१॥

गुरु छवि अजब नैन भर देखत, बाढ़ा आनंद हिये न समाय ॥२॥

धुन झनकार अधर से आवत, अमीधार चहुँ दिस बरखाय ॥३॥

नूर हिये में अद्भुत जागा, सोभा वाकी बरनी न जाय ॥४॥

राधास्वामी दयाल मेहर की भारी, अस लीला दई मोहिं दरसाय ॥५॥

शब्द ११ (प्रे० बा० २)

सुरतिया देख रहो, सतगुरु का मोहन रूप ॥१॥

सुरत शब्द की महिमा सुन सुन, धारी जुगत अनूप ॥२॥

शब्द डोर गह चढ़त अधर में, छोड़ दिया भौ कूप ॥३॥

काल देश के परे सिधारो, छोड़ी छाँह और धूप ॥४॥

राधास्वामी दरस निहारा, जहाँ रेखा नहिं रूप ॥५॥

शब्द १२ (प्रे० बा० २)

सुरतिया फड़क रही, सुन सतगुरु बानी सार ॥१॥

राग रागिनी धुन सँग गावत, जागत प्रेम पियार ॥२॥

घट में नित प्रति करती फेरा, लीला अजब निहार ॥३॥

गुरु पद परस चढ़ी ऊँचे को, सत्त पुरुष दरबार ॥४॥

राधास्वामी चरन निहारे, हुइ उन पर बलिहार ॥५॥

शब्द १३ (प्रे० बा० २)

सुरतिया केल करत, घट शब्द धुनन के संग ॥१॥

अधर चढ़त श्रुत हुइ मतवाली, भीँज रही रस रंग ॥२॥

हंसन संग करत नित केला, छोड़ा जगत कुरंग ॥३॥

घट में पाया विमल विलासा, रहे नित गुरु के संग ॥४॥

राधास्वामी चरन परस मगनानी, प्रीत बसी अँग अंग ॥५॥

शब्द १४ (प्रे० बा० २)

सुरतिया लाय रही, गुरु चरनन प्यार ॥१॥

उमँग सहित नित दरशन करती, पहिनाती गलहार ॥२॥

भाव संग परशादी लेती, पियत चरन रस सार ॥३॥

व्यञ्जन अनेक थाल भर लाई, आरत गावत सन्मुख ठाढ़ ॥४॥

राधास्वामी दया करी अन्तर में, निरखा घट उजियार ॥५॥

शब्द १५ (प्रे० बा० २)

सुरतिया गाय रही, राधास्वामी नाम अपार ॥१॥
दरशन कर गुरु सेवा करती, धर चरनन में प्यार ॥२॥
लीला देख हरखती मन में, गुरु परतीत सम्हार ॥३॥
शब्द संग नित सुरत लगावत, मगन होत सुन धुन झनकार ॥४॥
राधास्वामी मगन होय कर, दीना चरन अधार ॥५॥

शब्द १९ (प्रे० बा० २)

सुरतिया परस रही, राधास्वामी चरन अनूप ॥१॥

बिरह अंग ले सन्मुख आई, मगन हुई लख अचरज रूप ॥२॥

करम जलावत भाग सरावत, त्याग दिया अब भौ जल कूप ॥३॥

अधर चढ़त श्रुत गगन सिधारी, लखा जाय तिलोकी भूप ॥४॥

राधास्वामी नाम सुमिर धर ध्याना, निरख रही घट विमल सरूप ॥५॥

शब्द १७ (प्रे० भा० २)

बोलरी मेरी प्यारी मुरलिया, तरस रही मेरी जान (मुर०) ॥१॥

सुन सुन धुन मन उँमगत घट में, और शिथिल हुए प्रान (मुर०) २

रस भरे बोल सुने जब तेरे, गया कलेजा छान (मुर०) ॥३॥

तन मन की सब सुद्ध बिसारी, धुन में चित्त समान (मुर०) ॥४॥

राधास्वामी दया अधर चढ़ आई, सत पद दरस दिखान (मुर०) ॥५॥

शब्द १८ (प्रे० बा० २)

आज बाजै बीन सतपुर की ओर ॥टेक॥

सुन धुन सुरत हुई मस्तानी, गई भँवर चढ़ ऊपर दौड़ ॥१॥

पुरुष दरस कर अति मगनानी, सन्मुख हुइ ले आरत जोड़ ॥२॥

हंस सभी अब जुड़ मिल गावैं, आरत की हुई धूम और शोर ॥३॥

प्रेम सिंध में आय समानी, मिट गया महा काल का ज़ोर ॥४॥

यह पद मेहर दया से पाया, जब मिले राधास्वामी बंदी छोड़ ॥५॥

शब्द १८ (मे० वा० २)

होली खेले सुरतिया सतगुरु संग ॥टेक॥

अबीर गुलाल थाल भर लाई, भर भर डालत रंग ॥१॥

सतसंगी मिल आरत लाये, गावें उमँग उमंग ॥२॥

देख समा सब होत मगन मन, फड़क रहे अँग अंग ॥३॥

आनँद बरस रहा चहुँ दिस में, दूर हुई अब सबही उचंग ॥४॥

राधास्वामी होय प्रसन्न मेहर से, सब को लगाया अपने अंग ॥५॥

शब्द २० (प्रे० बा० २)

सुरत मेरी प्यारे के चरनन पड़ी ॥टेक॥

जगे भाग गुरु सन्मुख आई, त्रिय तापन से अधिक डरी ॥१॥

राधास्वामी छवि निरखत मन मोहा, सेवा में रहूँ नित्त खड़ी ॥२॥

प्रीत बढ़त छिन छिन अब घट में, माया ममता सकल जरी ॥३॥

धुन रस पाय हुई मतवाली, शब्दन की अब लगी झड़ी ॥४॥

राधास्वामी महिमा कस कह गाऊँ, चरन सरन गह आज तरी ५

शब्द २१ (मे० वा० २)

सजन सँग मनुआँ कर आज प्रीत ॥टेक॥

छोड़ कुसँग करो सतसंगा, भक्ति भाव की धारो रीत ॥१॥

गुरु सँग निस दिन नेह बढ़ाओ, वचन सुनो हिये धर परतीत ॥२॥

उमँग सहित कर घट अभ्यासा, शब्द पकड़ घर जावो मीत ॥३॥

गुरु बल धार हिये में अपने, काल करम की तोड़ो नीत ॥४॥

राधास्वामी मेहर से काज बनावें, जावो निज घर भौजल जीत ॥५

शब्द २२ (प्रे० बा० २)

आज चलो मनुआँ घर की ओर ॥टेक॥

निज घर का ले भेद गुरू से, जल्दी चालो घट में दौड़ ॥१॥

तन मन इन्द्री सुरत समेटो, भोगन से अब नाता तोड़ ॥२॥

धर परतीत धरो गुरु ध्याना, काल करम का टूटै ज़ोर ॥३॥

मन और सूरत अधर चढ़ावो, शब्दन का जहाँ हो रहा शोर ॥४॥

राधास्वामी चरनन जाय समावो, घट के सबही परदे फोड़ ॥५॥

शब्द २३ (मे० बा० २)

सुरत गुरु चरनन आन धरी ।।टेक।।

दुखी होय हटकर या जग से, गुरु सतसँग में आन अड़ी ।।१।।

मगन होय धारी गुरु जुगती, तीसर तिल में सुरत भरी ।।२।।

शब्द संग नित करे बिलासा, करम भरम से आज टरी ।।३।।

प्रीत प्रतीत बढ़त गुरु चरनन, सुन सुन धुन अब अधर चढ़ी ।।४।।

राधास्वामी दया दृष्टि अब कीन्ही, चरन सरन गह आज तरी ।।५।।

शब्द २४ (प्रे० बा० २)

परख कर छोड़ो माया धार ॥टेक॥

भोगंन का इन जाल बिछाया, जीव बहे सब उनकी लार ॥१॥

बिन सतगुरु कोइ बचन न पावे, उनकी ओटा गहो सम्हार ॥२॥

सतसँग कर धारो उन ध्याना, हिरदे में उन रूप निहार ॥३॥

पुष्ट होय चालें मन सूरत, घट में सुन अनहद झनकार ॥४॥

राधास्वामी चरन अब हिये बसाओ, मेहर से लेवें जीव उबार ॥५

शब्द २५ (मे० वा० २)

तन मन धन से भक्ति करोरी ॥टेक॥

कोरी भक्ति काम नहिँ आवे, याते हिये में प्रेम भरोरी ॥१॥

परम पुरुष राधास्वामी चरनन में, और सतसँग में प्रीत धरोरी २

दया करें गुरु भेद बतावें, तब धुन सँग सुर्त अधर चढ़ोरी ॥३॥

दीन ग़रीबी धार हिये में, उमँग उमँग गुरु चरन पड़ोरी ॥४॥

राधास्वामी मेहर करें जब अपनी, भौसागर से सहज तरोरी ॥५॥

शब्द २६ (मे० वा० २)

रँगीले रँग देव चुनर हमारी ॥टेक॥

ऐसा रंग रँगो किरपा कर, जग से हो जाय न्यारी ॥१॥

यह मन नित्त उपाध उठावत, याको गढ़ लो सारी ॥२॥

निरमल होय प्रेम रँग भीजे, जावे गगन अटारी ॥३॥

तुमरी दया होय जब भारी, सुरत अगम पग धारी ॥४॥

राधास्वामी प्यारे मेहर करो अब, जल्दी लेव सुधारी ॥५॥

शब्द २७ (प्रे० बा० २)

पियारे मेरे सतगुरु दाता ॥टेक॥

देखत रहूँ रूप मन भावन, और न कोई सुहाता ॥१॥

पावत रहूँ अमी परशादी, और नहीं कुछ भाता ॥२॥

चरन कँवल सेवत रहूँ निस दिन, और न कहीं मन जाता ॥३॥

गुन गाऊँ नित चरन धियाऊँ, और ख्याल नहिं लाता ॥४॥

राधास्वामी प्यारे बसैं हिये में, और न चित्त समाता ॥५॥

शब्द २८ (प्रे० बा० ३)

अतोला तेरी कर न सकै कोइ तोल ॥टेक॥

जिन पर मेहर मिले सतगुरु से, सतसँग में उन बनिया डौल ॥१॥

उमँग सहित लागे अब घट में, सुनत रहे नित अनहद बोल ॥२॥

सुन सुन धुन स्रुत चढ़त अधर में, काल करम का छूटा होल ॥३

चढ़ चढ़ पहुँची सत्तलोक में, दूर हुए सब माया खोल ॥४॥

राधास्वामी दरस मेहर से मिलिया, पाय गई पद अगम अडोल ५

शब्द २८ (प्रे० भा० ३)

गुरु प्यारे चरन पर जाउँ बलिहार ॥टेक॥

दया करी मोहिं खैंच बुलाया, सतसँग बचन सुनाये सार ॥१॥

अपने चरन की प्रीत घनेरी, मेरे हियें बसाई करके प्यार ॥२॥

दया करो घट भेद सुनाया, दिन दिन दई परतीत सम्हार ॥३॥

छवि अनूप लख जब धरा ध्याना, घट में निरखी बिमल बहार ४

राधास्वामी दयाल दया की न्यारी, शब्द सुनाय उतारा पार ॥५

शब्द ३० (प्रे० बा० ३)

गुरु प्यारे चरन मेरे प्रान अधार ॥टेक॥

क्या महिमा चरनन की गाऊँ, जीव पकड़ उन उतरें पार ॥१॥

मैं तो बसाय रही उन उर मे, प्रीत सहित करूँ ध्यान सम्हार ॥२

ध्यान धरत हुआ घट परकाशा, सुनत रही अनहद झनकार ॥३॥

चरन सरन गुरु हियरे धारी, नित्त रहूँ गुरु दया निहार ॥४॥

राधास्वामी दया चली अब घट में, सुन सुन धुन श्रुत होगई सार ५

शब्द ३१ (प्रे० बा० ३)

गुरु प्यारे चरन रचना की जान ॥टेक॥

आदि धार चेतन जो निकसी, उसने रचो सब रचना आन ॥१॥

वही धार गुरु चरन पिछानो, वही पिंड ब्रह्मंड समान ॥२॥

उसी धार का सकल पसारा, वोही धुन और नाम, कहान ॥३॥

जुगती ले गुरु से सुत अपनी, उसी धार को पकड़ चढ़ान॥४॥

राधास्वामी मेहर करैं जब अपनी, निज सरूप घट में दरसान ५

शब्द ३२ (मे० बा० ३)

गुरु प्यारे का मुखड़ा झाँक रहूँ ॥टेक॥

अद्भुत छवि निरखत हुई मोहित, हरख हरख दृष्टि तान रहूँ ॥१॥

लगन लगी गाढ़ी गुरु चरनन, दरसन रस ले मगन रहूँ ॥२॥

बचन सार गुरु सुने सतसँग में, अब तन मन की व्याध हरूँ ॥३॥

शब्द संग नित सुरत लगाऊँ, घट में धुन झनकार सुनूँ ॥४॥

रूप सुहावन राधास्वामी प्यारे, ध्यान धरत घट माहिँ लखूँ ॥५॥

शब्द ११ (प्रे० भा० १)

गुरु प्यारे के दरशन पावत रहूँ ॥टेक॥

दरशन करो प्यारे जीव अधारा, बिन दरशन अति बिकल रहूँ ॥१॥

दरशन पाय मोहिं मिलत अनन्दा, बिन दरशन मैं तड़प रहूँ ॥२॥

दरशन पाय दुख होवत दूरा, बिन दरशन मैं दुखित रहूँ ॥३॥

दरशन पाय सुख मन फिर आवे, बिन दरशन मैं बिपत सहूँ ॥४॥

नित प्रति दरशन देव राधास्वामी, बार बार तुम चरन पड़ूँ ॥५॥

शब्द ३४ (प्रे० वा० ३)

गुरु प्यारे के नैन रँगीले मेरा मन हर लीन ॥टेक॥
अद्भुत छबि निरखत नरनारी, वचन सुनत हुए दीन।
मन धार यक़ीन ॥१॥
सुन्दर रूप बसा नैनन में, दरस बिना तड़पत ग़मगीन।
जस जल बिन मीन ॥२॥
जब गुरु दर्शन मिला भाग से, मगन हुई रस पियत अमी।
गुर किरपा चीन ॥३॥

सतसँग कर गुरु सेवा लागी, निरमल हुई मेरी सुरत मलीन ।
हुए अघ सब छीन ॥४॥
शब्द भेद दे सुरत चढ़ाई, राधास्वामी मेहर अनोखी कीन ।
हुई चरनन लीन ॥५॥

शब्द ३५ (प्रे० बा० ३)

गुरु प्यारे का रंग चटकीला कभी उतरे नाहिँ ॥टेक॥
जिन पर मेहर करी गुरु प्यारे, सतसँग में उन लिया मिलाय ।
दई चरनन छाँह ॥१॥

करम भरम से लीन बचाई, निरमल कर उन लिया अपनाय।
गई काल की दाँय ॥२॥

प्रीत प्रतीत दई चरनन में, शब्द की महिमा दई बसाय।
उन हिरदे माहिँ ॥३॥

शब्द सुनाय सुत गगन चढ़ाई, लीला देख सब रहे हरखाय।
मिल गुरु गुन गाय ॥४॥

ऐसा रंग रँगा राधास्वामी, सब जीव चरन सरन में आय।
दृढ़ पकड़ी बाँह ॥५॥

शब्द ३६ (मे० बा० ३)

गुरु प्यारे का रँग अति निरमल, कभी मैला न होय ॥टेक॥
सतसँग धारा नितही जारी, काल जाल और करम कटाय।
दिये कल मल धोय ॥१॥
हिरदे में नई प्रीत जगावें, चरनन में परतीत बढ़ावें।
करम भरम दिये खोय ॥२॥
जुगत बताय करावैं करनी, मन सूरत धुन में धरनी।
मिला आनँद मोहिं ॥३॥

शब्द शब्द का भेद सुनाया, धुरपद का मोहिँ भरम लखाया ।
जहाँ एक न दोय ॥४॥
राधास्वामी सँग की महिमा भारी, मेहर दया पर जाउँ बलिहारी ।
सुत चरन समोय ॥५॥

शब्द ३७ (प्रे० बा० ३)

गुरु प्यारे चरन मन भावन, हिये राखूँ बसाय (छिपाय) ॥टेक॥
सुन सुन बचन गुरू प्यारे के, संशय भरम सब गये नसाय ।
मन भाव बढ़ाय ॥१॥

चरन सरन की महिमा जानी, मन और सूरत रहे लुभाय।
दृढ़ लगन लगाय ॥२॥
चरन भेद ले धारा ध्याना, नित प्रति रस और आनँद पाय।
निज भाग सराय ॥३॥
गुरु चरनन सम और न प्यारा, बारम्बार उन्हीं में धाय।
मन सुत हरखाय ॥४॥
राधास्वामी मेहर की क्या कहूँ महिमा, सहज लिया मोहिं चरन
लगाय। सब बँद छुड़ाय ॥५॥

शब्द ३८ (प्रे० बा० ३)

गुरु प्यारे का पंथ निराला, अति ऊँच ठिकान ॥टेक॥
बेद कतेब पार नहिँ पावेँ, जोगी ज्ञानी मरम न जान।
पर ब्रह्म ठिकान ॥१॥
तिरदेवा और दस औतारा, पीर पैग़म्बर वली भुलान।
गत संत न जान ।२॥
मुझ पर दया करी गुरु प्यारे, सुरत शब्द का भेद बतान।
घट राह चलान ॥३॥

प्रेम प्रीत गुरु चरनन धारी, धुन सँग मन और सुरत लगान।
चढ़ अधर अस्थान ॥४॥

राधास्वामी गतमत अति से भारी, बिन किरपा नहिँ होय पहिचान। कस पाय निशान ॥५॥

शब्द ३८ (प्रे० वा० ३)

गुरु प्यारे का कर दीदारा, घट प्रीत जगाय ॥टेक॥

गुरु दरशन की महिमा भारी, छिन में कोटिन पाप नसाय।
जीव काज बनाय ॥१॥

विरही जन कोई जाने रीती, जस दरपन मे दरस दिखाय।
हिये रूप बसाय ॥२॥

ऐसी लगन लगावैँ जो जन, छिन छिन रहैँ गुरु चरन समाय।
घट आनँद पाय ॥३॥

चरन भेद ले सुरत चढ़ावैँ, दरशन रस ले रहैँ त्रिप्ताय।
धुन शब्द सुनाय ॥४॥

मेहर करैँ गुरु राधास्वामी प्यारे, एक दिन लैँ निज चरन लगाय।
धुर घर पहुँचाय ॥५॥

शब्द ४० (मे० वा० ३)

गुरु प्यारे का सुन्दर रूप निरखत मोह रही ॥टेक॥

जग व्योहार लगा सब फीका, गुरु चरनन मन लागा नीका ।

सतसँग कर मल धोय रही ॥१॥

गुरु सरूप हिये माहिँ बसाना, रैन दिवस उन धरती ध्याना ।

शब्द में सुरत समोय रही ॥२॥

हरख हरख घट सुनती बाजा, भक्ति भाव का पाया साजा ।

कुटिल कुमत सब खोय रही ॥३॥

प्रीत प्रतीत चरन मे बढ़ती, शब्द संग सुत ऊपर चढ़ती ।
माया सिर धुन रोय रहो ॥४॥
राधास्वामी मेहर से गई दस द्वारे, सत्त अलख और अगम के पारे।
निज चरनन सुत पोय रहो ॥५॥

शब्द ४१ (मे० बा० ३)

सतगुरु प्यारे ने दिखाई घट उजियारी हो ॥टेक॥
सतसँग करत प्रीत हिये जागी, मन और सुरत चरन मेँ लागी ।
हुए सुखियारी हो ॥१॥

जिन सतसँग की सार न जानी, माया संग रहे लिपटानी ।
रहे दुखियारी हो ॥२॥

मेरी सुरत गुरु गगन चढ़ाई, भर भर पियत अमी जल लाई ।
हुई पनिहारी हो ॥३॥

सतगुरु प्रीत रीत अब जानी, छोड़ दई अब बिरन पहिचानी ।
मत संसारी हो ॥४॥

राधास्वामी प्यारे दया कराई, दीन निरख मेरे हुए सहाई ।
किया भौ पारी हो ॥५॥

शब्द ४२ (प्रे० बा० ३)

सतगुरु प्यारे ने पिलाया प्रेम पियाला हो ॥टेक॥
प्रीत नवीन हिये मेँ जागी, जगत मोह तज चरनन लागी।
गुरु लीन सम्हाला हो ॥१॥
प्रीत प्रतीत मेरे हिये धर दीनी, मेहर दया अन्तर मेँ चीन्ही।
गुरु कीन निहाला हो ॥२॥
उमँग उमँग अब घट मेँ चाली, सुन सुन धुन सुत हुई मतवाली।
लखा गुरु रूप विशाला हो ॥३॥

सुन्न सिखर होयगई सतपुर में, अटल भक्ति पाय हुई मगन मैं।
दई सतपुर्ष दयाला हो ॥४॥
राधास्वामी चरनन आरत धारी, मेहर दया उन कीनी भारी।
दिया निज धाम निराला हो ॥५॥

शब्द ४३ (मे० बा० २)

सतगुरु प्यारे ने खिलाया निज परशाद निवाला हो ॥टेक॥
ले परशाद प्रीत हुइ भारी, सतगुरु ने मोहिं आप सँचारी।
खोल दिया घट ताला हो ॥१॥

करम भरम सब जड़ से तोड़ा, जल पखान पूजन अब छोड़ा।
छोड़ा ईँट दिवाला हो ॥२॥

सतगुरु ने मोहिँ भेद जनाई, धुन सँग सूरत अधर चढ़ाई।
झाँका गगन शिवाला हो ॥३॥

गुरु दयाल मेरे हुये सहाई, मन माया की पेश न जाई।
थाका काल कराला हो ॥४॥

राधास्वामी धाम गई मैं सज के, राधास्वामी चरन पकड़ लिये धज से। उन कीना मोहिँ निहाला हो ॥५॥

शब्द ४४ (प्रे० बा० ३)

सतगुरु प्यारे ने सुनाई प्रेमा बानी हो ॥टेक॥
सुन सुन बचन प्रेम भरा मन में, फ़ूली नाहिँ समाऊँ तन में ।
हरख हरख हरखानी हो ॥१॥
मन और सुरत सिमट कर आये, गुरु मूरत हिये में दरसाये ।
हुई चरनन मस्तानी हो ॥२॥
छिन छिन मन अस उमँग उठाई, दरशन रस ले रहूँ अघाई ।
चरनन पर क़ुरबानी हो ॥३॥

बिन दरशन मोहिँ चैन न आवे, सुमिर सुमिर पिया जिया घबरावे।
भावे अन्न न पानी हो ॥४॥
बिनय सुनो राधास्वामी प्यारे, चरनन में मोहिँ राखो सदारे।
तुम समरथ पुरुष सुजानी हो ॥५॥

शब्द ४५ (मे० बा० ३)

अरी हे सहेली प्यारी प्रीतम दरस दिखादे जियरा बहु तड़पे ॥टेक॥
काल करम बहु पेच लगाये, बिन दरशन मैं रहूँ घबराये।
मनुआँ नित तरसे ॥१॥

जब जब प्रीतम छवि चित लाऊँ, नैनन से जल धार बहाऊँ ।

हियरा बहु धड़के ॥२॥

प्रीतम पीर सतावत निस दिन, बिन सतसँग दुखित रहे तन मन।

भाली ज्यों खड़के ॥३॥

जो कोइ प्रीतम महिमा गावे, लीला और बिलास सुनावे ।

मनुआँ अति हरखे ॥४॥

जब राधास्वामी का दरशन पाऊँ, उमँग उमँग में नित गुन गाऊँ ।

घट आनँद बरखे ॥५॥

शब्द ४६ (प्रे० बा० ३)

अरी हे सहेली प्यारी. गुरु की महिमा भारी।
धर उन चरनन प्यारा ॥टेक॥

गुरु पूरे सतपुर के बासी. उन सँग पावे सहज बिलासी।
सहज करैं भौ पारा ॥१॥

गुरु पूरे हितकारी साँचे, उन सँग जले न जग की आँचे।
सब विधि लेहिँ सुधारा ॥२॥

दीनदयाल है नाम गुरू का, दृढ़ कर पकड़ो चरन गुरू का।
कर उन नाम अधारा ।३॥

सतगुरु घर को बाट लखावैं, बल अपना दे सुरत चढ़ावैं।
शब्द सुनावैं सारा ॥४॥
मारग में गुरुपद दरसावैं, सत्तपुरुष का रूप लखावैं।
पहुँचे राधास्वामी धाम अपारा ॥५॥

शब्द ४७ (प्रे० बा० ३)

मेरे हिये मे बजत बधाई, संत सँग पायारे ॥१॥
ढूंढ़ फिरो जग में बहुतेरा, भेद कहीं नहिं पायारे ॥२॥
संत मता अति ऊँचा गहिरा, वेद कितेब न जानारे ॥३॥

बड़ भागी कोइ बिरले प्रेमी, तिनको मरम जनायारे ॥४॥
राधास्वामी मेहर से जीव उबारें, उन महिमा अगम अपारारे ॥५

शब्द ४८ (प्रे० बा० ३)

मेरे धूम भई अति भारी, दरस राधास्वामी कीन्हारे ॥१॥
भाग जगे मेरे धुर के सजनी, आज रूप रस लीन्हारे ॥२॥
कौन कहे महिमा अब उनकी, जिन प्रेमदान गुरु दीनारे ॥३॥
सुखी भया अब तन मन सारा, हुई गुरु चरन अधीनारे ॥४॥
राधास्वामी चरन रही लिपटानी, अमृत हर दम पीनारे ॥५॥

शब्द ४८ (प्रे० बा० ३)

राधास्वामी छवि निरखत मुसकानी, तन मन सुध बिसरानीरे॥१

बिन दरशन कल नाहिँ पड़त है, भावे अन्न न पानीरे ॥२॥

देखत रहूँरी रूप गुरु प्यारा, छिन छिन मन हरखानीरे ॥३॥

दया करी गुरु दीनदयाला, हुइ जग से अलगानीरे ॥४॥

लिपट रहूँ हरदम चरनन से, राधास्वामी जान पिरानीरे ॥५॥

शब्द ५० (प्रे० बा० ३)

सुन सुन महिमा गुरु प्यारे को, हुई मै दरस दिवानीरे ॥१॥

धाय धाय चरनन में आई, परगट रूप दिखानोरे ॥२॥

मोहित हुई अचरज छवि निरखत, तन मन सुद्ध भुलानोरे ॥४॥

बार बार बल जाउँ चरन पर, कस गुन गाउँ बखानोरे ॥४॥

राधास्वामी जान जान के जाना, उन चरनन लिपटानोरे ॥५॥

शब्द ५१ (प्रे० बा० ३)

कस प्रीतम से जाय मिलूँ मैं, कोई जतन बताओरे ॥१॥

तड़प रही मैं बिन पिया प्यारे, कोई दरस दिखाओरे ॥२॥

रैन दिवस मोहिं चैन न आवे, किस विधि करूँ उपाओरे ॥३॥

बिरह अगिन नित सुलगत भड़कत, प्रेम धार बरसाओरे ॥४॥

राधास्वामी दयाल दरस देव अब की, तन मन शांत धराओरे ॥५॥

शब्द ५२ (प्रे० बा० ३)

भाग चलो जग से तुम अब के, सतसँग मेँ मन दीजोरे ॥१॥

इन्द्री भोग त्याग देव मन से, चरन सरन गुरु लीजोरे ॥२॥

ले उपदेश करो अभ्यासा, सुरत शब्द रँग भीजोरे ॥३॥

प्रीत प्रतीत सहित गुरु सेवा, तन मन धन से कीजोरे ॥४॥

राधास्वामी चरन बसाय हिये मे , नित्त सुधा रस पीजोरे ॥५॥

शब्द ५२ (प्रे० बा० ३)

गुरु सतसँग करो तन मन से, वचन सुनत नित जागोरे ॥१॥

मोह नींद में बहु दिन सोये, अब गुरु चरनन लागोरे ॥२॥

ले उपदेश शब्द का गुरु से, घट अन्तर में झाँकोरे ॥३॥

उमग अंग ले जोड़ दृष्टि को, गुरु स्वरूप को ताकोरे ॥४॥

राधास्वामी दया निरख निज हिये में, जग से छिन छिन भागोरे ॥५॥

शब्द ५४ (प्रे० बा० ३)

मै गुरु प्यारे के चरनोँ की दासी ॥टेक॥

नित उठ दरसन करूँ उमँग से, हार चढ़ाऊँ अपने गुरु सुखरासी १

मत्था टेक लेउँ परशादी, करम भरम सब होते नाशी ॥२॥

प्रीत बढ़त गुरु चरनन निसदिन, जग से रहती सहज उदासी ॥३॥

शब्द कमाई करूँ प्रेम से, मगन होय रहूँ नित गुरु पासी ॥४॥

राधास्वामी मेहर से काज बनावो, दीजे मोहिँ निज चरन बिलासी ॥५॥

शब्द ५५ (प्रे० बा० ३)

मै पड़ी अपने गुरु प्यारे की सरना ॥टेक॥

मेहर करी गुरु भेद बताया, सुरत शब्द मैं निसदिन भरना ॥१॥

गुरु के चरन पकड़ हित चित से, भौसागर से सहजहि तरना ॥२

गुरु का बल सँग लेकर अपने, मन माया से छिन छिन लड़ना ॥३

जगत जाल जंजाल जार कर, गगन ओर धुन सुन सुन चढ़ना ॥४

राधास्वामी बल अब धार हिये मैं, काल करम से काहे को डरना ५

शब्द ५६ (मे० धा० ३)

मैं हुई सखी अपने प्यारे की प्यारी ॥टेक॥

सेवा में नित हाज़िर रहती, हरख हरख नित रूप निहारी ॥१॥

दरशन शोभा क्योंकर बरनूँ, छवि पर जाउँ छिन छिन बलिहारी २

मेहर भरी दृष्टी जब डारी, भूल गई तन मन सुधि सारी ॥३॥

कस गुन गाऊँ अपने गुरु प्यारे के, तन मन धन उन चरनों पै वारी ४

राधास्वामी प्यारे से यही वर मागूँ, चरनन में रहूँ लीन सदारी ५

शब्द ५७ (प्रे० बा० ३)

जब से मैं देखा राधास्वामी का मुखड़ा ॥टेक॥

मोहित हुई तन मन सुधि भूली, छोड़ दिया सब जग का झगड़ा ॥१

राधास्वामी छवि छागई नैनन में, नहीं सुहावे मोहिं अब कोइ रगड़ा ॥२॥

नित्त बिलास करूँ दरशन का, भर भर प्रेम हुआ मन तगड़ा ॥३॥

मेहर हुई सुत चढ़त अधर में, छोड़ चली अब काया छकड़ा ॥४

राधास्वामी मेहर करी अब भारी, छिन छिन मन चरनन में जकड़ा ५

शब्द ५८ (मे० बा० ३)

राधास्वामी छबि मेरे हिये बस गई री ॥टेक॥

राधास्वामी शोभा क्योंकर गाऊँ, नैन कँवल दृष्टि जोड़ दई री ॥१

दरस रूप रस बरनूँ कैसे, नरदेह मेरी आज सुफल भई री ॥२॥

नित नित ध्याय रहूँ गुरु रूपा, घट में आनँद बिमल लई री ॥३॥

बिन प्रीतम बहु जन्म बिताये, और बिपता बहु भाँति सही री ॥४॥

अब मोहिं राधास्वामी मिले भाग से, चरन लगाय निज सरन दई री ॥५॥

शब्द ५८ (प्रे० बा० ३)

आज मैं पाया दरस गुरु प्यारे ॥टेक॥

दरशन कर हिये होत हुलासा, बचन सुनत भ्रम मिट गये सारे ॥१॥

अचरज महिमा सतसँग देखी, गुरु उपदेश लियां उर धारे ॥२॥

ध्यान धरत सुत घेरी घट में, गगन ओर चढ़ती धुन लारे ॥३॥

मेहर हुई सुत अधर चढ़ाई, तीन लोक के होगई पारे ॥४॥

राधास्वामी दयाल की महिमा भारी, कोटिन जीव लिये उन तारे ५

शब्द ६० (प्रे० बा० ३)

बिकल जिया तरस रहा, मोहिँ दरस दिखा दो जी ॥टेक॥

त्रिय तापन सँग तप रही सारी, चरन अमीँ पिला दो जी ॥१॥

इन्द्रियन सँग नित भरमत डोलै, सोता मनुआँ जगा दो जी ॥२॥

जुगन जुगन से बिछुड़ी चरन से, अभी पिया से मिला दो जी ॥३॥

शब्द जुगत तुम दीन बताई, घट कपट हटा दो जी ॥४॥

राधास्वामी प्यारे गुरू हमारे, मोहिँ पार लगा दो जी ॥५॥

शब्द ९१ (मे० बा० ३).

परम गुरु राधास्वामी प्यारे जगत में देह धर आये ।
शब्द का देके उपदेशा, हंस जिव लीन मुक्ताये ॥१॥
किया सतसँग नित जारी, दया जीवों पै की भारी ।
करम और भरम गये सारे, जीव चरनों में घिर आये ॥२॥
भक्ति का आप दे दाना, दिया जीवन को सामाना ।
देख हुआ काल हैराना, रही माया भी मुरझाये ॥३॥

बढ़ा कर चरन में प्रीती, दई घट शब्द परतीती ।
काल और करम को जीती, सुरत मन उलट कर धाये ॥४॥
जोत लख सूर निरखा री, परे सत शब्द परखा री ।
अलख और अगम पेखा री, चरन राधास्वामी परसाये ॥५॥

शब्द ६२ (मे० बा० ३)

सतगुरु के मुख सेहरा चमकीला अचरज शोभा देत सखी ॥१॥
फूल गूँथ कर प्रेमन लाई, महक सुगंध सब लेत सखी ॥२॥

आरत कर सब मगन हुए अब, तन मन देते भेंट सखी ॥३॥
सूर किया गुरु खेत जिताया, काल को डाला रेत सखी ॥४॥
राधास्वामी दयाल दया की भारी, सहज मिला पद सेत सखी ॥५॥

शब्द ६३ (प्रे० बा० ३)

चल देखिये गुरुद्वारे जहाँ प्रेम समाज लगारी ॥टेक॥
प्रेमी जन जुड़ मिल बैठे, राधास्वामी महिमा कहते ।
गुरु दरशन र[illegible] नित लेते, इक इक का भाग जगारी ॥१॥

मैं नीच अधम नाकारा, सतसँग का लीन सहारा ।
गुरु लेहैं मोहिँ सुधारा, उन चरनन प्रीत पकारी ॥२॥
गुरु बचन सुनत मन मोहा, तब भूल भरम सब खोया ।
फिर करम धरम भी सोया, योँ माया काल ठगारी ॥३॥
घट अंतर ध्यान लगाई, सुन सुन धुन अति हरखाई ।
मन सूरत अधर चढ़ाई, गुरु अचरज दरश तकारी ॥४॥
गगना मैं बजी बधाई, बिरोधी सब रहे मुरझाई ।
राधास्वामी की फिरी दोहाई, उन महिमा छिन छिन गा री ॥५॥

शब्द ६४ (प्रे० बा० ३)

सखी री मैं निस दिन रहूँ घबरानी ॥टेक॥
मन इन्द्री की चाल निरख कर, बहु बिधि रहूँ पछतानी ।
भोग बासना छोड़त नाहीं, उन सँग रहे अटकानी ।
दरद कस कहूँ बखानी ॥१॥
बहु बिधि याहि समझौती दीनी, नेक कहन नहिं मानी ।
मैं तो हार हार अब बैठी, गुरु बिन कौन बचानी ।
कहो मेरी कहा बसानी ॥२॥

सुमिरन ध्यान में ठहरे नाहीं, थोथा भजन करानो ।
बहु विध अपना जोर लगाऊँ, छोड़े न भरम कहानो ।
छीर तज पीवे पानी ॥३॥
गुरु दयाल की मेहर परखती, तौभी धुन में प्रीत न आनी ।
घट में चंचल नेक न ठहरे, चिन्ता में रहे नित्त भुलानी ।
कहो कस जुगत कमानी ॥४॥
अब थक कर मैं करूँ वीनती, हे गुरु दृष्ट मेहर की आनी ।

क्षमा करो और दया उमँगाओ, हे राधास्वामी पुरुष सुजानी ।

प्रेम का देवो दानी ॥५॥

शब्द ९५ (प्रे० वा० ४)

आज मेघा रिमझिम बरसे हिये पिय की पीर सतावे ॥टेक॥

पिया छाय रहे परदेसा, मैं पड़ी काल के देसा ।

मोहिं निसदिन यही रे अँदेसा, कोइ पिया से आन मिलावे ॥१॥

पपिहा जब पिउ पिउ गावे, मोहिँ पिया प्यारे की याद आवे ।
बिरह अगिन भड़क भड़कावे, पिया बिन को तपन बुझावे ॥२॥
सतगुरु हितकारी मिलिया, उन पिया का सँदेसा कहिया ।
मारग का भेद सुनइया, सुत धुन सँग अधर चढ़ावे ॥३॥
मोहिँ दीन अधीन निहारा, गुरु कीनी मेहर अपारा ।
मोहिँ भौजल पार उतारा, सुत चढ़ चढ़ अधिक हरखावे ॥४॥
धुन सुन सुत अधर सिधारी, सत अलख अगम्म लखारी ।
पिया राधास्वामी रूप निहारी, उन महिमा छिन छिन गावे ॥५॥

शब्द ६६ (मे० बा० ४)

सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी आज अचरज बचन
सुनाय रहेरी ॥टेक॥

सुन सुन बानी सब हुए हैं दिवाने, तन मन सुध बिसराय रहेरी ॥१॥
मेहर दया की बरखा भारी, प्रेम के बदला छाय रहेरी ॥२॥
धुन झनकार सुनत घट अंतर, नइ नइ उमँग जगाय रहेरी ॥३॥
सेवा कर हिये होत हुलासा, तन मन वार धराय रहेरी ॥४॥
राधास्वामी पर जाऊँ बलिहारी, जुड़मिल उन गुन गाय रहेरी ॥५॥

शब्द ६७ (प्रे० बा० ४)

सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी आज। अद्भुत दरस दिखाय रहेरी ॥टेक॥

दरशन कर मोहे नर नारी, छबि पर दृष्टि तनाय रहेरी ॥१॥

क्या कहूँ महिमा अचरज रूपा, (बहु) सूर चंद्र शरमाय रहेरी ॥२॥

जिन जिन दरश करा मेरे गुरु का, सोइ निज भाग जगाय रहेरी ॥३

जगत जीव क्या जाने महिमा, (सब) करम धरम भरमाय रहेरी ॥४

आवोरे आवो जीव सरनी आवो, राधास्वामी मेहर कराय रहेरी ५

शब्द ६८ (मे० बा० ४)

रुन झुन रुन झुन हुई धुन घट में सुन सुन लगी मोहिं प्यारी रे ॥टे०

यह धुन आवत दसम द्वार से, काल शब्द से न्यारी रे ॥१॥

सुन सुन धुन अब सोया मनुआँ, इन्द्री भी थक हारी रे ॥२॥

अधर चढ़त सुत मगन होय कर, गुरु चरनन पर वारी रे ॥३॥

उमँग उमँग सुत गई सतपुर में, दया दृष्ट गुरु डारी रे ॥४॥

आगे चल पहुँची निज धामा, राधास्वामी के बलिहारी रे ॥५॥

शब्द ९८ (सा० ब०)

करूँ बेनती राधास्वामी आज । काज करो और राखो लाज ॥१॥
मैं किंकर तुम चरण नमामी । पाऊँ अगम पुर और अनामी ॥२॥
कहाँ लग बिनती कह कर गाऊँ । तुम्हरि सरन स्वामी मैं बल जाऊँ ३
बिनती करनी भी नहीं जानूँ । तुम्हरे चरन को पल पल मानूँ ॥४॥
तुम बिन और न दूजा कोई । सेवक मुझसा और न होई ॥५॥
मैं जंगी तुम हो राधास्वामी । जोड़ मिलाया तुम अंतरजामी ॥६॥

शब्द ७० (प्रे० बा० १)

सखी री मेरे राधास्वामी प्यारे री। वोही मेरी आँखोँ के तारे री॥१॥

वोही मेरे जग उजियारे री। वोही मेरे प्रान अधारे री॥२॥

आन कर जीव चितारे री। किया मोहिँ जग से न्यारे री॥३॥

दया कर लीन उबारे री। गुरू मेरे परम उदारे री॥४॥

देस उन अगम अपारे री। निरख छबि तन मन वारे री॥५॥

स्वामी मेरे दीन दयारे री। लिया मोहिँ गोद बिठारे री॥६॥

शब्द ७१ (प्रे० बा० २)

कोइ चलो उमँग कर सुन नगरी ॥टेक॥

संतसँग में अब तन मन देना, शब्द पकड़ चलो गुरु डगरी ॥१॥

सतगुरु से नित प्रीत बढ़ाना, चरन सरन दृढ़ कर पकड़ी ॥२॥

सोता मनुआ फिर उठ जागे, धुन सँग सुरत रहे जकड़ी ॥३॥

प्रेम पंख ले उड़ी गगन में, राधास्वामी बल से हुइ तकड़ी ॥४॥

काल करम अब रहे मुरझाई, धुन रही सिर माया मकड़ी ॥५॥

राधास्वामी मेहर से निज घर पाया, अमर हुई चरनन लगरी ॥६॥

शब्द ७२ (प्रे० बा० २)

आज बाजै भँवर धुन मुरली सार ॥टेक॥
यह मुरली सतलोक से आई, सोहं पुरुष किया विस्तार ॥१॥
जिन जिन सुनी आन यह बंसी, मोह रहे धर प्यार ॥२॥
दूर हुए मान और अहंकारा, काल और महा काल रहे हार ॥३॥
यह धुन कोई बड़ भागी पावे, जापर सतगुरु होँय दयार ॥४॥
मुरली की छाया धुन सुन कर, मोहे सब सुर नर और नार ॥५॥
राधास्वामी दया करेँ जिस जन पर, ताहि सुनावेँ यह धुन सार ६

शब्द ७३ (प्रे० बा० २)

आज गा सुरत गुरु आरत सार ॥टेक॥
प्रेम भरी गुरु सन्मुख आई, तन मन दीना वार ॥१॥
उमँग उमँग गुरु दरस निहारत, बढ़त हरख और प्यार ॥२॥
परमारथ अब मीठा लागा, और किरत सब दई बिसार ॥३॥
गुरु चरनन में आय पड़ी अब, सतसँग करत हुई हुशियार ॥४॥
पी पी रस हिय में त्रिप्तानी, मिला सुरत को शब्द अधार ॥५॥
राधास्वामी मेहर पाय घर चाली, सहज उतर गई भौ जल पार ६

शब्द ७४ (प्रे० बा० २)

आज आई सुरतिया उमँग भरी ॥टेक॥
सुन गुरु बचन मगन मन होती, नैन कँवल दृष्टी जोड़ धरी ॥१॥
प्रीत प्रतीत बढ़न अब छिन छिन, आसा जग की आज जरी ॥२॥
गुरु से लीना सार उपदेशा, सुरत गगन की ओर चढ़ी ॥३॥
करम धरम सब पटक दिये हैं, मन माया से खूब लड़ी ॥४॥
काल जाल डाले बहुतेरे, गुरु बल हिये धर नहीं डरी ॥५॥
राधास्वामी लिया मोहिं अपनाई, भौसागर से आज तरी ॥६॥

शब्द ७५ (प्रे० बा० २)

आज सुनत सुरतिया घट मेँ बोल ॥टेक॥
उमँग उमँग लागी अब घट मेँ, करत धुनन सँग चोल ॥१॥
गुरु पै वार रही अब तन मन, चित से सुनती बचन अनमोल ॥२॥
संत मता अति ऊँचा सीधा, दृढ़ कर पकड़ा शब्द अतोल ॥३॥
परमारथ मेँ हित कर लागी, सुफल हुई नर देह अमोल ॥४॥
प्रीत जगत की निपट स्वारथी, देखी निज कर जाँच और तोल ॥५॥
राधास्वामी मुझ पर हुए दयाला, दूर किये सब माया खोल ॥६॥

शब्द ७६ (प्रे० बा० २)

राधास्वामी चरन में सुर्त लागी ॥टेक॥
मोह जाल जंजाल तोड़ कर, जग से अब छिन छिन भागी ॥१॥
सुन गुरु वचन मगन हुआ मनुआँ शब्द सँग सूरत जागी ॥२॥
संसै भरम अब गये नसाई, करम धरम विच दई आगी ॥३॥
काम क्रोध और लोभ बिकारा, मान ईरखा दई त्यागी ॥४॥
सतगुरु चरनन प्यार बढ़ावत, मन हुआ धुन रस अनुरागी ॥५॥
राधास्वामी सरन धार हिये अंतर मेहर दया उन से माँगी ॥६॥

शब्द ७७ (प्रे० बा० २)

राधास्वामी प्रीत हिये छाय रही ॥टेक॥
जब से स्वामी दर्शन कीने, छबि उन की मन भाय रही ॥१॥
उमँग उमँग सेवा में लागी, राधास्वामी दया नित पाय रही ॥२॥
हित चित से करती सतसंगा, नित नया प्रेम जगाय रही ॥३॥
दिन दिन बढ़त चरन बिस्वासा, गुरु सरूप हिये ध्याय रही ॥४॥
शब्द संग नित सुरत चढ़ावत, घट में आरत गाय रही ॥५॥
राधास्वामी सतगुरु मिले दयाला, चरनन सुरत लगाय रही ॥६॥

शब्द ७८ (प्रे० बा० २)

आज आई सुरतिया उमँग सम्हार ॥टेक॥

ज़गत भोग से कर वैरागा, तन मन धन गुरु चरनन,वार ॥१॥

जग जीवन का संग तियागा, सतसँग में लगी धर कर,प्यार ॥२॥

गुरु सरूप निरखत मोहा मन, घर बाहर की सुद्ध बिसार ॥३॥

वचन गुरू के प्यारे लागे, सेवा करत भाव हिये धार ॥४॥

सहज सुरत लागी अंतर में, घट में सुन अनहद झनकार ॥५॥

राधास्वामी प्यारे मेहर कराई, सहज किया मेरा बेड़ा पार ॥६॥

शब्द ७९ (प्रे० बा० २)

मेरे उठी कलेजे पीर घनी ॥टेक॥
बिन दरशन जियरा नित तरसे, चरन ओर रहे दृष्टि तनी ॥१॥
नित्त पुकार करूँ चरनन में, दरस देव मेरे पूरन धनी ॥२॥
घट का पाट खोलिये प्यारे, जल्दी करो हुई देर घनी ॥३॥
जब लग दरश न पाऊँ घट में, तब लग नहिँ मेरि बात बनी ॥४॥
हरख हुलास न आवे मन में, चिंता में रहे बुद्ध सनी ॥५॥
अब तो मेहर करो राधास्वामी, चरनन की रहूँ सदा रिनी ॥६॥

शब्द ८० (मे० बा० २)

खेल गुरू सँग आज री मेरी प्यारी सुरतिया ॥टेक॥
उमँग सहित आओ चरनन मैँ, भक्ति भाव ले साजरी ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥१॥
दिन दिन हिये मैँ प्रेम बढ़ाओ, छोड़ो जग का पाज री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥२॥
सुरत चढ़ाय गगन पर धावो, तख़्त बैठ कर राज री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥३॥

सुन्न मैं हरख मिलो हंसन से, मंगल गा और नाच री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥४॥
सतगुरु चरन जाय लिपटानी, पाया भक्ती दाज री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥५॥
राधास्वामी अंग लगाया मेहर से, सिर पर राखा ताज री ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥६॥

शब्द ८१ (प्रे० बा० २)

सुरत मेरी गुरु सँग हुई निहाल ॥टेक॥
प्रीत प्रतीत दई चरनन मैं, गुरु ने लिया मोहिं आप सम्हाल ॥१॥
कर सतसँग बुद्धि हुई निरमल, कर्म भर्म दिये आज निकार ॥२॥
उमँग सहित लागूँ घट धुन मैं, ध्याऊँ सतगुरु रूप विशाल ॥३॥
गुरु बल सूरत अधर चढ़ाऊँ, हार रहा अब काल कराल ॥४॥
घट मैं निरखूँ बिमल बिलासा, बचन सुनूँ नित अजब रसाल॥५॥
चरन सरन गह हुई निचिंती, राधास्वामी प्यारे हुए दयाल ॥६॥

शब्द ८२ (प्रे० बा० २)

दयाला मोहिँ लीजे तारी ॥टेक॥
तुम्हरी दया की महिमा भारी, मैं हूँ पतित अनाड़ी ॥१॥
जग में सारी बैस बिताई, भरमत रहा उजाड़ी ॥२॥
मेहर करो मोहिँ चरन लगावो, शब्द भेद देव सारी ॥३॥
तुम्हरी गत है अगम अपारा, छिन में कर दो पारी ॥४॥
मैं बल जाउँ चरन पर तुम्हरे, तन मन धन सब वारी ॥५॥
राधास्वामी प्यारे सतगुरु पूरे, लीना मोहिँ उबारी ॥६॥

शब्द ८३ (सा० व०)

मोहिँ मिला सुहाग गुरू का, मैं पाया नाम गुरू का ॥१॥
मैं सरना लिया गुरू का, मैं किंकर हुआ गुरू का ॥२॥
मेरे मस्तक हाथ गुरू का, मैं हुआ गुलाम गुरू का ॥३॥
मैं पाया अधार गुरू का, म पकड़ा चरन गुरू का ॥४॥
मैं सर्वस हुआ गुरू का, मैं होगया अपने गुरु का ॥५॥
कोइ और न मुझसा गुरु का, गुरु का मैं गुरु का गुरु का ॥६॥
राधास्वामी नाम यह धुर का, मैं पाया धाम उधर का ॥७॥

शब्द ८४ (प्रे० बा० १)

बिन सतगुरु दीदार तड़प रही मन मैं।
बेकल बिरह सताय रही मेरे तन मैं ॥१॥
हरदम उठत हिलोर याद प्रीतम की।
कासे कहूँ जनाय बिथा दुख जिय की ॥२॥
मेरे राधास्वामी दीन दयाल चरन उर धारैं।
निज दरशन देवैं आय मोह जग टारैं ॥३॥

क्या महिमा उनकी कहूँ पुर्प अविनाशी ।
तन मन करूँ कुरबान हुई मैं दासी ॥४॥
भाव भक्ति हिय राख गुरू के सन्मुख आतो ।
मन का कपट हटाय जिये की विपत जनाती ॥५॥
राधास्वामी हुए प्रसन्न दया कर जुगत उपाई ।
सतसँग में लिया मेल भेद मोहिं गुप्त जनाई ॥६॥
दिन दिन वढ़त हुलास रूप गुरु विसरत नाहीं ।
सुमिरूँ राधास्वामी नाम बसूँ गुरु चरनन छाँहीं ॥७॥

शब्द ८५ (प्रे० बा० १)

गुरु याद चढ़ी अब मन मैं, गुरु नाम जपूँ छिन छिन मैं ॥१॥
गुरु सतसँग चित से चाहूँ, गुरु दरशन पर बल जाऊँ ॥२॥
नित सन्मुख गुरु के खेलूँ, मन प्रेमी जन सँग मेलूँ ॥३॥
राधास्वामी नाम सुहाया, सुमिरन मैं चित्त लगाया ॥४॥
राधास्वामी मेहर कराई, मैं बालक लिया अपनाई ॥५॥
राधास्वामी नित गुन गाऊँ, राधास्वामी रूप धियाऊँ ॥६॥
राधास्वामी सरन गहीरी, राधास्वामी छाँह बसीरी ॥७॥

शब्द ८६ (प्रे० बा० १)

गुरु रूप लगा मोहिँ प्यारा, गुरु दरशन मोर अधारा ॥१॥
नित सतगुरु नाम सुमिरना, गुरु चरनन मेँ चित धरना ॥२॥
गुरु आज्ञा नित्त सम्हारूँ, गुरु मूरत हियरे धारूँ ॥३॥
प्रेमी जन लागे प्यारे, उन सँग गुरु सेवा धारे ॥४॥
मेरे मन मेँ चाहत येही, गुरु सँग करूँ मैं नितही ॥५॥
गुरु सुनिये बिनती मेरी, घट प्रीत देओ मोहि गहिरी ॥६॥
चरनन मेँ लेव अपनाई, नित राधास्वामी नाम जपाई ॥७॥

शब्द ८७ (मे० चा० २)

चरन गुरु हिरदे धार रहा, दया राधास्वामी माँग रहा ॥१॥
नित्त गुरु दर्शन करता आय, हिये में छिन छिन प्रीत बढ़ाय ॥२॥
उमँग कर परशादी लेता, चरन गुरु हिरदे में सेता ॥३॥
प्रेम सँग गुरु बानी गाता, नाम राधास्वामी नित ध्याता ॥४॥
सरन राधास्वामी दृढ़ करता, हिये में दृढ़ निश्चय धरता ॥५॥
गावता गुरु गुन उमँग उमंग, प्रीत से करता सतगुरु संग ॥६॥
आरती गाई तन मन वार, मेहर राधास्वामी पाई सार ॥७॥

शब्द ८८ (मे० बा० २)

चरन गुरु हिरदे आन बसाय, सरन में निस दिन उमँगत धाय ॥१॥
गुरू से हरदम करता प्यार, बचन उन धरता हिये मझार ॥२॥
आरती गावत उमँग उमंग, गुरू का करता निसदिन संग ॥३॥
मगन होय नये नये बस्तर लाय, गुरू को देता आप पहिनाय ॥४॥
गुरू की सोभा निरख निहार, हिये में नित्त बढ़ाता प्यार ॥५॥
गुरू संग खेलत दिन और रात, निरख छवि गुरु के बल बल जात ६
उमँग कर लेता गुरु परशाद, चरन राधास्वामी रखता याद ॥७॥

शब्द ८८ (प्रे० बा० २)

मगन मन गुरु सन्मुख आया, आरती प्रेम सहित लाया ॥१॥
पदारथ नये नये हित से लाय, धरे गुरु सन्मुख थाल भराय ॥२॥
सजा गुरु भक्ती की थाली, प्रीत गुरु जोत लई बाली ॥३॥
आरती हंसन सँग गाता, उमँग अब नई नई दिखलाता ॥४॥
धूम आरत की हुई भारी, स्वामी ने मेहर करी न्यारी ॥५॥
शब्द सुन घट में डाला शोर, घटा अब काल करम का ज़ोर ॥६॥
मेहर सतगुरु परशादी पाय, चरन राधास्वामी परसे आय ॥७॥

शब्द ८० (प्रे० बा० २)

चरन गुरु सेवा धार रहा, बिगन मन सहज निकार रहा ॥१॥
पड़ा था सतसंग से मैं दूर, भाग से पाया दरस हज़ूर ॥२॥
मेहर राधास्वामी बरनी न जाय, कुटुँब सब लीना चरन लगाय ॥३
पिरेमी जन के दर्शन पाय, मगन होय करता सेवा धाय ॥४॥
देख नित गुरु सतसंग बिलास, उमँग मन चाहत चरन निवास ५
चित्त में धारूँ गुरु उपदेश, सुनत रहूँ महिमा सतगुरु देश ॥६॥
नित्त गुरु बानी पढ़त रहूँ, नाम राधास्वामी जपत रहूँ ।७॥

शब्द ८१ (प्रे० बा० २)

सुरतिया सेव करत गुरु भक्तन की दिन रात ॥१॥
सब का काम काज नित करती, आलस नेक न लात ॥२॥
चाह सँवार मेल नित करती, जैसे छीर शकर के साथ ॥३॥
छाँट बचन सतगुरु के सारा, धर मन में हरखात ॥४॥
डोलत फिरत जपत गुरुनामा, रूप सुहावन हिये बसात ॥५॥
भजन नेम से करती घट में, शब्द सुनत मगनात ॥६॥
कुल परिवार संग ले अपने, राधास्वामी सरन समात ॥७॥

शब्द ८२ (प्रे० बा० २)

सुरतिया हरख रही आज गुरु छबि देख नई ॥१॥
ज़ेवर कपड़े लाय अनेका, कर सिंगार रही ॥२॥
मसनद तकिया लाय पलँग पर, गुरु को बिठाय दई ॥३॥
मोतियन की अब लड़ियाँ पोहकर, थाल सजाय लई ॥४॥
फूलन के गलहार पहिना कर, गुरु के चरन पई ॥५॥
ले थाली गुरु आरत गावत, चहुँ दिस हरख अनंद मई ॥६॥
राधास्वामी दयाल प्रसन्न होय कर, दीना नाम सही ॥७॥

शब्द ८३ (प्रे० बा० २)

सुरतिया ध्याय रही हिये में गुरु रूप बसाय ॥१॥
दृष्टि जोड़ कर धरती ध्याना, मन में प्रेम जगाय ॥२॥
मन और सुरत सिमट नभ द्वारे, तन से रहे अलगाय ॥३॥
आनँद अधिक पाय अब दिन दिन, गुरु चरनन में रही लिपटाय ४
धुन की धार अधर से आवत, पी पी रस हरखाय ॥५॥
निरखत घट में बिमल प्रकाशा, सूर चाँद जहाँ रहे लजाय ॥६॥
छिन छिन राधास्वामी के गुन गावत, चरन ओट ले सरन समाय ७

शब्द ८४ (प्रे० बा० २)

सुरतिया खेल रही गुरु चरनन पास ॥१॥
हरख हरख करती गुरु दरशन, देखत नित्त विलास ॥२॥
भाव भक्ति हिरदे में धारी, बाढ़त नित्त हुलास ॥३॥
सेवा करत उमँग कर गुरु की, धर हिरदे विस्वास ॥४॥
दया करो राधास्वामी प्यारे, देखा घट परकाश ॥५॥
उमँग उमँग करती गुरु ध्याना, सुनती घट में अमर अवास ॥६॥
राधास्वामी चरन सरन गह बैठी, सब से होय उदास ॥७॥

शब्द ८५ (मे० बा० २)

सुरतिया सील भरी आज करत गुरू सँग हेत ॥१॥
जग व्यौहार त्याग दिया मन से, सुनत वचन गुरु चेत ॥२॥
शब्द संग नित सुरत लगावत, भजन ध्यान रस लेत ॥३॥
बिरह भाव बैराग सम्हारत, मन माया को डाला रेत ॥४॥
गुरु किरपा तज श्याम धाम को, सुरत लगाय रही पद सेत ॥५॥
सो पद दिया मेहर से गुरु ने, वेद पुकार रहा तिस नेत ॥६॥
राधास्वामी दीन अधीन निरख मोहिं चरनन, रस अब
छिन छिन देत ॥७॥

शब्द ८६ (प्रे० बा० २)

सुरतिया प्रेम सहित अब करती गुरु सतसँग ॥१॥
बाली भोली सरना आई, धार ग़रीबी अंग ॥२॥
राधास्वामी नाम सुमिरती हित से, मन की रोक तरंग ॥३॥
सतसँग बचन धारती हिये मेँ, होवत संशय भंग ॥४॥
ध्यान धरत निरखत परकाशा, धारा रंग त्रिरंग ॥५॥
दिन दिन घट मेँ होत सफ़ाई, छूटे सबही कुरंग ॥६॥
राधास्वामी दयाल मेहर से अपनी, मोहिँ सिखाया भक्ती ढंग ॥७

शब्द ८७ (प्रे० ब० २)

कोइ सुनो प्रेम से गुरु की बात ॥टेक॥
सेवा कर सतसँग कर उनका. और बचन उन हिये बसात ॥१॥
सुरत शब्द का ले उपदेशा, मन और सूरत गगन चढ़ात ॥२॥
सुन सुन धुन मन होय रस माता, दिन दिन आनँद बढ़ता जात ॥३
प्रीत प्रतीत धार गुरु चरनन. हिये में दरशन छिन छिन पात ॥४॥
भाग नवीन जगै तेरा भाई, छिन छिन गुन सतगुरु के गात ॥५॥
आरत कर हिये प्रेम बढ़ाओ. दया मेहर की पाओ दात ॥६॥

राधास्वामी काज करैं तेरा पूरा, सरन धार तब चरन समात ॥७

शब्द ८८ (प्रे० बा० २)

मेरी लागी गुरू सँग प्रीत नई ॥टेक॥

सतसँग कर गुरु सेवा लागी, सरधा सहित उपदेश लई ॥१॥

जगत भाव भय मन मैं राखत, साधारन गुरु टेक गही ॥२॥

मन इन्द्री को मोड़ा नाहीं, भजन ध्यान अस करत रही ॥३॥

सतगुरु दया दृष्टि अब कीनी, घट मैं प्रीत जगाय दई ॥४॥

जग जंजाल भोग इन्द्री के, चित से सहज बिसार दई ॥५॥

उमँग उमँग गुरु चरनन लागी, शब्द की हुई परतीत सही ॥६॥
राधास्वामी मेहर से लिया सुधारी, भौसागर के पार गई ॥७॥

शब्द ८८ (प्रे० वा० २)

आज माँगे सुरतिया भक्ती दान ॥टेक॥
त्रिय तापन सँग बहु दुख पाये, फीका लगा जहान ॥१॥
खोजत खोजत सतसँग पाया, मगन हुई गुरु सन्मुख आन ॥२॥
प्रेम सहित गुरु सेवा धारी, गुरु सरूप का धारा ध्यान ॥३॥
दरशन रस घट में नित लेती, तन मन धन करती कुरबान ॥४॥

शब्द जुगत नित पिरत कमाती, धुन सँग मन और सुरत लगान ॥५॥
नई प्रतीत प्रीत घट जागा, सतगुरु की करती पहिचान ॥६॥
मेहर हुई सुर्त अधर सिधारी, राधास्वामी चरनन जाय समान ७

शब्द १०० (मे० वा० २)

होली खेलै सुरत आज हंसन संग ॥टेक॥
घंटा शंख मृदंग बजावत, चढ़ा प्रेम का रंग ॥१॥
नैन नगर होय चढ़ी अधर में तन से होय असंग ॥२॥
झलक जोत और उमड़ घटा की, निरखी छोड़ तरंग ॥३॥

गगन जाय रंग माट भराया. गुरु से खेलो होय निसंक ॥४॥
धरन गगन विच धूम मची अब, भीज रही अँग अंग ॥५॥
सुरत अबीर भरत अब सुन मैं, फाग रचाया उमँग उमंग ॥६॥
सरन सम्हार चरन मैं पहुँची. धारा राधास्वामी रंग ॥७॥

शब्द १०१ (प्रे० भा० २)

आज आई सुरत हिये उमँग बढ़ाय ॥टेक॥
मन इन्द्री को रोकत घट मैं, गुरु सरूप का ध्यान लगाय ॥१॥
शब्द संग नित सुरत चढ़ावत, घट मैं अद्भुत दर्शन पाय ॥२॥

धुन झनकार सुनत मन सरसा, हिये में प्रीत नवीन जगाय ॥३॥
सतगुरु संग करत नित केला, लीला देख अधिक हरखाय ॥४॥
गुरु दर्शन की महिमा भारी, अचरज शोभा बरनी न जाय ॥५॥
तन मन धन वारत चरनन पर, मस्त हुई निज आनँद पाय ॥६॥
राधास्वामी चरन पाय हुई निरभय, छिन छिन अपना भाग सराय ७

शब्द १०२ (प्रे० बा० २)

कोई धारो गुरू के चरन हिये ॥टेक॥
जग में छाय रहा तम चहुँ दिस, सब जिव सहते ताप त्रिये ॥१॥

निकसन को कोई राह न पावैं, सब जिव जाता है जम लिये ॥२॥
जिन पर दया हुई धुर घर की, वही धारैं गुरु शब्द जिये ॥३॥
गुरु का सँग कर मन हुआ निर्मल, रस पावत अभ्यास किये ॥४॥
प्रीत प्रतीत बढ़त चरनन पर, तन मन धन सब वार दिये ॥५॥
चरन पकड़ सुर्त चढ़त अधर मैं, मगन होत रस शब्द पिये ॥६॥
राधास्वामी दया पार घर पहुँची, काल करम सब टार दिये ॥७॥

शब्द १०३ (मे० बा० २)

कोइ करो प्रेम से गुरु का संग ॥टेक॥
मन से कपट और मान तियागो, प्रेमी जन का धारो ढंग ॥१॥

प्रीत प्रतीत करो तुम ऐसी, जस माता सँग पुत्र निसंक ॥२॥
गुरु आज्ञा हित चित से मानो, सेवा करो तुम सहित उमंग ॥३॥
राधास्वामी चरन सरन दृढ़ करना, राधास्वामी नाम बसे
अँग अंग ॥४॥
मन रहे नित दर्शन रस माता, सुरत भीज रहे शब्द के रंग ॥५॥
जग ब्यौहार लगा अब काँचा, छोड़ दिया अब नाम और रंग ॥६॥
राधास्वामी दया दृष्टि से हेरा, विरोधी होगये आपहि तंग ॥७॥

शब्द १०४ (मे० व० २)

चरन गुरु दिन दिन बढ़ती प्रीत ॥टेक॥
समझ गुरु गत मत अगम अपार. धार रही मन मैं दृढ़ परतीत ॥१
गुरु छवि निरख हुआ मन मायल, वचन सुनत नित हरखत चीत ॥२
उमँग उमँग सेवत गुरु चरना, भाव सहित पावत गुरु सीत ॥३॥
दया मेहर गुरु छिन छिन निरखत, दृढ़ कर चरन सरन अब लीत ४
प्रेम भक्ति धारा अब जागी त्याग दई मन मुखता रीत ॥५॥
गुरु को जाना अब सच यारा. जग मैं नहिँ कोइ सच्चा मीत ॥६
राधास्वामी सरन अधारी. निज घर चाली भौजल जीत ॥७॥

शब्द १०५ (प्रे० बा० ३)

गुरु प्यारे की महिमा क्या कहूँ गाय ॥टेक॥

नित नई लीला विमल विलासा, देख देख मन अति हरखाय ॥१॥

जग कारज की सुध बिसरानो, रैन दिवस आनँद बरखाय ॥२॥

दर्शन सोभा कस कहुँ गाई, मन और सुरत रहे लुभाय ॥३॥

जान और प्रान वार देउँ गुरु पर, जस मोपै मेहर उन करी बनाय ॥४॥

कुमत हटाय सुमत अब दीनो, मन और सूरत शब्द लगाय ॥५॥

माया के सब बिघन निकारे, काल करम भी दूर पराय ॥६॥

राधास्वामी चरन अधार जिऊँ मैं, राधास्वामी रूप रहूँ
नित ध्याय ॥७॥

शब्द १०६ (प्रे० बा० ३)

गुरु प्यारे का महल सुहावन कस देखूँ जाय ॥टेक॥

गुरु बिन कोई भेद न जाने, उनका सँग अब करूँ बनाय।
हिये उमँग जगाय ॥१॥

सुन सुन देश की महिमा भारी, मन में दिन दिन प्रीत बढ़ाय।
बिरह हिये रही छाय ॥२॥

इन्द्री भोग नहीँ अब भावे, मन मेँ रहे नित दरद समाय।
पिया पीर सताय ॥३॥

बिन गुरु कौन दवा करै मेरी, मेहर से देवैँ सुरत चढ़ाय।
धुन शब्द सुनाय ॥४॥

बिमल बिलास लखैँ अंतर मेँ, तब तन मन कुछ शांत धराय।
घट पाट खुलाय ॥५॥

कँवल कँवल की लीला न्यारी, मेहर दया से निरखूँ जाय।
अति आनंद पाय ॥६॥

बिनय करूँ राधास्वामी चरनन में, वेग देव मेरा काज बनाय।
हिये दया उमगाय ॥७।

शब्द १०७ (प्रे० बा० ३)

गुरु प्यारे का मारग झीना, कोइ गुरु मुख जाय ॥टेक॥
मन इन्द्री को रोक अंदर में, भोग बासना दूर हटाय।
मन मान नसाय ॥१॥
सतगुरु प्रेम भीज रही निस दिन, नया नया भाव और उमँग
जगाय। गुरु सेवा लाय ॥२॥

होय हुशियार चलत गुरु मारग, घट में विमल विलास दिखाय।
गुरु ध्यान धराय ॥३॥
तन मन धन चरनन पर वारत, मन और सूरत गगन चढ़ाय।
घट शब्द जगाय ॥४॥
करम काट गुरु बल चली आगे, माया दल भो दूर पराय।
दिया काल गिराय ॥५॥
ऐसी स्रुत गुरु चरन अधीनी, सूर होय सत शब्द समाय।
धुन बीन बजाय ॥६॥

मेहर हुई सुत अधर सिधारी, राधास्वामी दिया निज घर पहुँचाय । लिया गोद बिठाय ॥७॥

शब्द १०८ (प्रे० बा० ३)

गुरु प्यारे की छबि मन मोहन रही नैनन छाय ॥टेक॥

जब से मैं पाए गुरु प्यारे के दरशन, हिरदे में रही प्रीत समाय । मन अति अकुलाय ॥१॥

बार बार दरशन को धावत, बिन दरशन रहे अति घबराय । कहीं चैन न पाय ॥२॥

ऐसी दशा देख गुरु प्यारे, निज सतसँग में लिया मिलाय ।
घट प्रेम बढ़ाय ॥३॥

तन मन इन्द्री सिथिल हुए अब, दरशन रस ले रहें निसाय ।
जग भाव भुलाय ॥४॥

गुरु सरूप अब बसा हिये में, हरदम गुरु का ध्यान धराय ।
कभी विसर न जाय ॥५॥

प्रीत प्रतीत बढ़ी गुरु चरनन, गुरु सम जग में कोइ न दिखाय ।
रही महिमा गाय ॥६॥

राधास्वामी मेहर से घट पट खोला, धुन सँग सूरत अधर चढ़ाय।
दई घर पहुँचाय ॥७॥

शब्द १०८ (प्रे० बा० ३)

अहो मेरे प्यारे सतगुरु अमृत धार बहा दो तन मन सुन भीजै ॥टेक
प्रेम बिना सब करनी फीकी, नेकहु मोहिं न लागे नीकी।
घट धुन रस दीजै ॥१॥
मैं हूँ नीच अधम नाकारा, तुम चरनन का लीन सहारा।
मोहिं अपना कीजै ॥२॥

दीन अधीन पड़ा तुम द्वारे, तुम बिन को मेरी दया बिचारे।
मोहिं सरना लीजै ॥३॥
तुम समरथ क्यों देर लगावो, दरशन दे मेरी सुरत चढ़ावो।
आयु छिन छिन छीजै ॥४॥
प्रेम भंडार तुम्हारे भारी, मेहर से खोलो गगन किवाड़ी।
मन और स्रुत रीझै ॥५॥
आवो रे जीव सरन में आवो, सतगुरु से अब प्रीत लगावो।
अमृत रस पीजै ॥६॥

राधास्वामी मेरा काज सँवारा, खोला आदि शब्द भंडारा।
स्रुत धुन सँग सीझै ॥७॥

शब्द ११० (प्रे० वा० ३)

अरी हे सहेली प्यारी जुड़ मिल गुरु गुन गावो उनकी मेहर
अपारी ॥टेक॥

भरम रही थी बहु विधि जग मैं, अटक रही थी जहाँतहाँ मग मैं।
उन सीधी राह दिखारी ॥१॥

प्यार किया मोहिँ सँग लगाया, घट का भेद अजब समझाया ।
जुगती सहज बतारी ॥२॥

धर हिये ध्यान लखा गुरु रूपा, सुन सुन शब्द तजा भौ कूपा ।
हियरे हरप बढ़ारी ॥३॥

दया करी घट प्रीत बढ़ाई, सोता मनुआँ लोन जगाई ।
सूरत अधर चढ़ारी ॥४॥

को सके अस सतगुरु गुन गाई, को जाने उन अधिक बड़ाई ।
अबला जीव उबारी ॥५॥

जन्म जन्म का मारा पीटा, जोन जोन में काल घसीटा।
मेहर से लीन बचारी ॥८॥
मैं गुरु प्रीतम लेत मनाई, छिन छिन राधास्वामी चरन धियाई।
उन कीना मोर उपकारी ॥७॥

शब्द १११ (प्रे० बा० ३)

अरी हे सहेली प्यारी गुरु सँग फाग रचावो मिला औसर भारी ॥टे०
ऋतु फागुन अब आन मिली है, गुरु प्यारे से प्रीत ठनी है।
चके मत अब प्यारी ॥१॥

प्रेम रंग घट माट भरावो, गुरु पै छिड़क छिड़क हुलसावो ।
निरखो सोभा न्यारी ॥२॥
सुरत अबीर मलो चरनन में, प्रीत प्रतीत धरो निज मन में ।
तन मन धन देउँ वारी ॥३॥
सेवा कर गुरु लेव रिझाई, प्रेमी जन सँग आरत गाई ॥
देखो अजब बहारी ॥४॥
अैस औसर नहिँ बारंबारा, गुरु चरनन करो प्रेम अधारा ।
जग.भय लाज बिसारी ॥५॥

गुरु भक्ती की महिमा भारी, जाने जो जिन जुगत सम्हारी ।
प्रेम रँग भीजै सारी ॥८॥
परम गुरू मेरे प्रीतम प्यारे, राधास्वामी यह सब खेल खिलारे ।
उन पर जाऊँ बलिहारी ॥७॥

शब्द ११२ (प्रे० बा० ३)

अरी हे सहेली प्यारी गुरु बिन कौन उतारे मोहिँ भौसागर पारा टे०
गुरु ही मात पिता पति प्यारे, गुरुही सच्च समरथ करतारे ।
गुरु मेरे प्रान अधारा ॥१॥

जग में फैल रहा तम भारी, करमन में भरमे जिव मारी ।
गुरु बिन घोर अँधियारा ॥२॥
वचन सुना गुरु समझ बढ़ावें, घट में शब्द भेद दरसावें ।
निरखे अजब उजारा ॥३॥
याते गुरु सँग जोड़ो नाता, मन रहे उन चरनन में राता ।
गुरु बिन नहिँ और सहारा ॥४॥
चरन सरन गुरु दृढ़ कर गहना, आज्ञा उन की सिर पर धरना ।
ले शब्द का मारग सारा ॥५॥

घट मेँ निसदिन करो कमाई, धुन सँग सूरत अधर चढ़ाई ।
काल से होय छुटकारा ॥६॥
राधास्वामी परम गुरू दातारे, या बिधि जीव को लेहिँ उबारे ।
उन चरनन धरो प्रेम पियारा ॥७॥

शब्द ११३ (मे० बा० ३)

मैँ तो आय पड़ी परदेस गैल कोइ घर की बता दीजो रे ॥१॥
मन इन्द्री सँग बहु दुख पाये, भेद सुख घर का जना दीजो रे ॥२॥
हे गुरु समरथ बंदी छोड़ा, मोहिँ चरनोँ मेँ आज लगा लीजो रे ॥३

डरत रहूँ नरकन के दुख से, मोहिं जम से आप बचा लीजो रे ॥४॥
शब्द रूप तुम्हरा अगम अपारा, सोई मोहिं लखा दीजो रे ॥५॥
जुगत तुम्हार कमाऊँ उमँग से, शब्द में सुरत समा दीजो रे ॥६॥
राधास्वामी सतगुरु प्यारे, काज मेरा पूरा बना दीजो रे ॥७॥

शब्द ११४ (प्रे० बा० ३)

दरस पाय मन बिगस रहा गुरु लागे प्यारे री ॥१॥
बार बार छबि पर बल जाऊँ, चरन सीस पर धारे री ॥२॥
कौन वस्तु गुरु आगे राखूँ, तन मन धन सब वारे री ॥३॥

क्या मुख ले मैं महिमा गाऊँ, उन गत मत अगम अपारे री ॥४॥
जीव पड़े चौरासी भोगें, गुरु बिन कौन उबारे री ॥५॥
मेरा भाग जगा किरपा से, मोहिं जग से कीन नियारे री ॥६॥
राधास्वामी मेहर से जुगत बताई, धुन सुन गइ दसवें द्वारे री ॥७

शब्द ११५ (प्रे० बा० ३)

प्रेम भक्ति गुरु धार हिये में आया सेवक प्यारा हो ॥टेक॥
उमँग उमँग कर तन मन धन को, गुरु चरनन पर वारा हो ॥१॥
गुरु दरशन कर बिगसत मन में, रूप हिये में धारा हो ॥२॥

आठ पहर गुरु संग रहावे, जग में रहता न्यारा हो ॥३॥
मन माया को आँख दिखावे, गुरु बल सूर करारा हो ॥४॥
शब्द डोर गह चढ़ता घट में, पहुँचा गगन मँझारा हो ॥५॥
आगे चल सुनि सारँग किँगरी, मुरली धीन सितारा हो ॥६॥
राधास्वामी मेहर से दीना, निज पद अगम अपारा हो ॥७॥

शब्द ११६ (प्रे० बा० ३)

ऋतु वसंत फूली जग माहीँ, मिल सतगुरु घट खोज करो री ॥१॥
दीन अधीन होय चरनन मेँ, प्रेम उमँग हिये बीच धरो री ॥२॥

सुरत शब्द मारग दरसावें, शब्द माहिँ अब सुरत भरो री ॥३॥
दृढ़ परतीत धार हिये अंतर, दया मेहर ले गगन चढ़ो री ॥४॥
राधास्वामी दयाल जीव हितकारी, हित चित से उन सरन पड़ो री॥५
राधास्वामी नाम सुमिर निस दिन में, मन इंद्री के भोग तजो री ॥६
काज करें तेरा पूरा छिन में, भौसागर से आज तरो री ॥७॥

शब्द ११७ (प्रे० बा० ४)

हेरी तुम कौन हारी मोहिँ अटकावन हारी ॥टेक॥
मैं दरशन को गुरु प्यारे के जाऊँगी, मानूँ न कहन तुम्हारी ॥१॥

मेरा चित्त बसे गुरु चरनन, तुम बिरथा क्यों करो पुकारी ॥२॥
गुरु मेरे दीन दयाल कृपाला, उनके चरन पर जाऊँ बलिहारी ॥३॥
मोसी अधम को चरन लगाया, तुमको भी वे लेहैं उबारी ॥४॥
आवो चलो सजना सँग मेरे, सतगुरु चरन सीस अब डारी ॥५॥
सब जीवन को यही संदेशा, जैसे बने तैसे सरन सम्हारी ॥६॥
राधास्वामी प्यारे सतगुरु मेरे, सब जीवन का काज सुधारी ॥७॥

शब्द ११८ (प्रे० बा० ४)

सुरतिया उमँग उमँग गुरु आरत करत सम्हारं ॥१॥

दीन अधीन चरन में आई, बिसरत कुल संसार ॥२॥
प्रीत सहित गुरु सेवा करती, निच्च बढ़ावत प्यार ॥३॥
सुन सुन महिमा गुरु सतसँग की. भाव हिये में धार ॥४॥
दिन दिन बढ़त चरन बिस्वासा, गावत राधास्वामी नाम अपार ॥५॥
प्रेमी जन से हेल मेल कर. गुरु गुन गावत सार ॥६॥
राधास्वामी महिमा हिये बसावत, संशय भरम सब दूर निकार ॥७॥

शब्द ११८ (प्रे० बा० ४)

मन तू कर ले हिये धर प्यार. राधास्वामी नाम का आधार ॥टेक॥

राधास्वामी नाम है अगम अपारा, जो सुमिरे तिस लेहिँ उबारा।
सुन घट में अनहद झनकार ॥१॥
राधास्वामी धाम है ऊँच से ऊँचा, संत बिना कोइ वहाँ न पहुँचा।
दरस किया जाय कुल्ल करतार ॥२॥
राधास्वामी नाम की महिमा भारी, शेष महेश कहत सब हारी।
लीला अपर अपार ॥३॥
राधास्वामी परम पुरुष जग आये, हंस जीव सब लिये मुक्ताये।
और जीवन पर बीजा डार ॥४॥

नाम की महिमा बहु बिधि गाई, मुक्ती की यही जुगत बताई ।
सुमिरो राधास्वामी बारम्बार ॥५॥
राधास्वामी नाम का भेद सुनाया, सुरत शब्द मारग दरसाया ।
धुन सँग सुरत चढ़ाओ पार ॥६॥
धुन आत्मक जो राधास्वामी नामा, तिस महिमा कस कहूँ
बखाना । जो सुने सोइ जाय निज घर बार ॥७॥

शब्द १२० (मे० बा० ४)

मन तू सुन ले चित दे आज राधास्वामी नाम की आवाज़ ॥टेक॥

अनहद बाजे घट घट बाजेँ, अनुरागी सुन सुन आराधेँ ।
प्रेम भक्ति का लेकर साज ॥१॥
तीन लोक मेँ अनहद राजे, सत्त लोक सत शब्द बिराजे ।
तिस परे राधास्वामी नाम की गाज ॥२॥
शब्द की महिमा संतन गाई, जिन मानी धुन तिन्हेँ सुनाई ।
कर दिया उन का पूरा काज ॥३॥
राधास्वामी नाम हिये मेँ धारा, सोई जन हुआ सब से न्यारा ।
त्याग दई कुल जग की लाज ॥४॥

राधास्वामी नाम प्रीत जिन धारी, राधास्वामी तिस को लिया सुधारी। दान दिया वाहि भक्ती दाज ॥५॥
राधास्वामी नाम है अपर अपारा, राधास्वामी नाम है सार का सारा। जो सुनैँ सोइ करै घट मैँ राज ॥६॥

शब्द १२१ (रा० ब०)

देखत रहीरी दरस गुरु पूरे, चाखत रहीरी प्रेम रस मूरे ॥१॥
सोभा सतगुरु बरनी न जाई, बाजत घट मैँ अनहद तूरे ॥२॥
बुंद चढ़ी तज पिंड असारा, पहुँची जाय सिंधु सत नूरे ॥३॥

राधास्वामी नाम प्रीत जिन धारी, राधास्वामी तिस को लिया सुधारी। दान दिया वाहि भक्ती दाज ॥५॥

राधास्वामी नाम है अपर अपारा, राधास्वामी नाम है सार का सारा। जो सुनैं सोइ करै घट में राज ॥६॥

शब्द १२१ (शा० व०)

देखत रहीरी दरस गुरु पूरे, चाखत रहीरी प्रेम रस मूरे ॥१॥
सोभा सतगुरु बरनी न जाई, बाजत घट में अनहद तूरे ॥२॥
बुंद चढ़ी तज पिंड असारा, पहुँची जाय सिंधु सत नूरे ॥३॥

गरजत गगन विरह उठ जागी, मन कायर अब होवत सूरे ॥४॥
चरण कँवल गुरु हिरदे धारा, करत तमोगुन दम दम चूरे ॥५॥
कृपा दृष्टि सतगुरु अब धारी, काल चक्र डारत अब तोड़े ॥६॥
समुंद सोत धस सुरत समानी, मान सरोवर दरस्त हूरे ॥७॥
सुरत चढ़ाय गई सतनामा, पहुँची राधास्वामी चरण हजूरे ॥८॥

शब्द १२२ (प्रे० बा० १)

ऐसा को है अनोखा दास जा पै सतगुर हुए हैं दयाल री ॥१॥
सुमिरन भजन ध्यान में तकड़ा, मारा मन और काल री ॥२॥

सेवा करे उमँग से भारी, छिन छिन चरन सम्हार री ॥३॥
प्रेम प्रीत सतगुरु से लागी, नहिँ भावे धन माल री ॥४॥
भाव भक्ति नित प्रती बढ़ावत, चले अनोखी चाल री ॥५॥
नाम तेग गह जूझत मन से, धार चरन की ढाल री ॥६॥
अधर चढ़े गुरु दर्शन पावे, पीवे अमीरस हाल री ॥७॥
राधास्वामी अंग लगाया, मोहिँ कीना आज निहाल री ॥८॥

शब्द १२३ (प्रे० बा० १)

आरत गाऊँ राधास्वामी आज । तन मन लीजे कीजे काज ॥१॥

जग में रहूँ अचिंत उदासा । चरनन में चित सहज निवासा ॥२॥

प्रेम सहित प्रीतम रँग राचा । सेवा कर मन होत हुलासा ॥३॥

छवि सतगुरु की अति मन भाई । काल करम दोउ देख डराई ॥४॥

दया मेहर क्या बरनूँ भाई । सतगुरु ने मोहिं लिया अपनाई ॥५॥

ऊँचा मत और देस रँगीला । सहज जोग सुत शब्द रसीला ॥६॥

सतसँग कर अंतर और बाहर । चरन परस पहुँचूँ मैं धुर घर ॥७

अचरज देस और अचरज बानी । राधास्वामी चरन सुरत लिपटानी ॥८॥

शब्द १२४ (प्रे० बा० १)

आरत गावे दास दयाला । संशय भरम सब दूर निकाला ॥१॥
सतगुरु चरनन प्रीत बढ़ाई । मन और काल रहे मुरझाई ॥२॥
नित नित उमँग नवीन उठाई । शोभा गुरु देखत हरखाई ॥३॥
प्रेम प्रीत का थाल सजाई । सुरत शब्द की जोत जगाई ॥४॥
बहु विधि सामाँ धरे बनाई । उमँग सहित गुरु आरत गाई ॥५॥
समाँ बँधा मन अति हरषाई । आनँद मंगल चहुँ दिश छाई ॥६॥
सुरत उमंग चढ़ी दस द्वारे । तीन लोक के हो गई पारे ॥७॥

आगे सतगुरु धाम दिखाई। राधास्वामी चरनन जाय समाई ॥८॥

शब्द १२५ (प्रे० बा० २)

सुरतिया झूल रही आज धरन गगन के बीच ॥१॥
घेर फेर मन घट में लाई, सुरत अधर में खींच ॥२॥
गगन तख़्त पर गुरू बिराजे, मेहर करी मोहिं लीना ईंच ॥३॥
माया दल थक रहा डगर में, काल करम दोउ डारे भींच ॥४॥
होय निसंक चढ़ूँ नित घट में, सैर करूँ पद ऊँच और नीच ॥५॥
सुन सतशब्द गई अमरापुर, छोड़ दई संगत मन नीच ॥६॥

घट में भक्ती पौद खिलानी, प्रेम रूप जल से रही सींच ॥७॥
राधास्वामी चरन पाय बिश्रामा, निर्भय सोऊँ आँखें मींच ॥८॥

शब्द १२६ (मे० वा० २)

सुरतिया खड़ी रहे नित सेवा में गुरु पास ॥१॥
चरन दबावत पंखा फेरत, धर मन में बिस्वास ॥२॥
ब्यंजन अनेक बनाय प्रीत से, लावत गुरु के पास ॥३॥
जब सतगुरु ने भोग लगाया, परशादी ले बढ़त हुलास ॥४॥
अमीं रूप जल लाय पिलावत, मुख अमृत पी बुझत पियास ॥५॥

नाम गुरू हिरदे मैं धारा, जपती स्वाँसो स्वाँस ॥६॥
शब्द संग नित सुरत लगावत, निरख रही घट मैं परकाश ॥७॥
राधास्वामी आरत नित नित गाऊँ, दीन्हा मुझ को चरन निवास ८

शब्द १२७ (प्रे० बा० २)

आज खेलै सुरत गुरु चरनन पास ॥टेक॥
न्यारा कर गुरु लिया अपनाई, चरन मिले निज सुख की रास ॥१॥
नित गुरु दर्शन करूँ उमँग से, यही मैं मन मैं धरती आस ॥२॥
गुरु सम और न प्यारा लागे, गुरु ही का नित करूँ विस्वास ॥३॥

छिन नहिँ बिछड़ूँ चरन गुरू से, गुरु ही के सँग रहूँ निस बास ॥४
गुरु पर तन मन धन सब वारूँ, गुरु दासन की हुइ मैं दास ॥५॥
भोग बिलास जगत नहिँ भावैं, जग से रहती सहज उदास ॥६॥
राधास्वामी से कुछ और न मागूँ, दीजे मोहिँ निज चरन निवास ७
राधास्वामी महिमा निसि दिन गाऊँ, राधास्वामी सुमरूँ
स्वाँसो स्वाँस ॥८॥

शब्द १२८ (प्रे० बा० २)

राधास्वामी चरन में मन अटका ॥टेक॥
गुरु के बचन रसीले लागे, जग से अब छिन छिन भटका ॥१॥

करम धरम और जग व्योहारा, सब को अब धर धर पटका ॥२॥
इन्द्री भोग और जगत पदारथ, सब का मैंट दिया खटका ॥३॥
भेद पाय सुर्त लागी घट मैं, शब्द संग अब मन लटका ॥४॥
चरन सरन राधास्वामी धारी, काल करम को दिया भटका ॥५॥
सुरत चढ़ाय गगन में पहुँची, कर्मन का फूटा मटका ॥६॥
सतपुर दरस पुरुष का पाया, प्रेम रंग अब नया चटका ॥७॥
राधास्वामी दयाल मेहर अस कीनी, खेल खिलाया मोहिं नटका ॥८॥

शब्द १२८ (प्रे० बा० २)

कोइ जागे सुरत सुन गुरु बचना ॥टेक॥

मोह नींद में सब जिव सोते, काम क्रोध सँग नित पचना ॥१॥

इन्द्री भोग लगे अति प्यारे, उनहीं में निस दिन खपना ॥२॥

कोइ कोइ जीव फड़क या जग से, संत चरन में करें लगना ॥३॥

देख ब्यौहार असार जगत का, सहज सहज मन से तजना ॥४॥

सतगुरु चरनन प्रीति बढ़ावत, सतसँग में निस दिन जगना ॥५॥

मन और सुरत प्रेम रँग भीने, शब्द संग घट में रचना ॥६॥

सतगुरु ने जब दया विचारी, पहुँची जाय सुरत गगना ॥७॥
वहाँ से चली अधर में प्यारी, राधास्वामी चरन जाय पकना ॥८॥

शब्द १३० (प्रे० बा० ३)

मैं तो होली खेलन को ठाढ़ी स्वामी प्यारे झटपट खोलो किवाड़ी १
प्रेमरंग की बरखा कीजे, भीजे सुरत हमारी ॥२॥
देर देर बहु देर भई है, कहाँ लग करूँ पुकारी ॥३॥
तड़प तड़प जिया तड़प रहा है, दरशन देव दिखारी ॥४॥
सुन्दर रूप लखूँ अद्भुत छबि, होवे घट उजियारी ॥५॥

ऋतु फागुन अब आय मिली है, नई नई फाग खिलारी ॥६॥
राधास्वामी परम दयाला, चरनन लेव मिलारी ॥७॥
बिनती करूँ दोउ कर जोरी, करलो प्रेम दुलारी ॥८॥

शब्द १३१ (प्रे० बा० ३)

हे गुरु मैं तेरे दीदार का आशक़ जो हुआ।
मन से बेज़ार सुरत बार के दीवाना हुआ ॥१॥
इक नज़र ने तेरी ऐ जाँ मुझे बेहाल किया।
लैला के इश्क़ में मजनूँ सा परेशान किया ॥२॥

मैं हूँ बीमार मेरे दर्द का नहीं और इलाज ।
मेरे दिल ज़ख़्म का मरहम तेरी बोली है इलाज ॥३॥
तेरे मुखड़े की चमक ने किया मन को नूराँ ।
सूरज और चाँद हज़ारों हुए उस से ख़िजलाँ ॥४॥
जग में इस चक्र ज़माने का यह दस्तूर हुआ ।
प्रेमी प्रीतम के चरन लाग के मशहूर हुआ ॥५॥
हिरस दुनियाँ की मेरे दिल से हुई है सब दूर ।
तेरे दरशन की लगन मन में रही है भरपूर ॥६॥

वाह वाह भाग जगे गुरु चरनन सुर्त मिली ।
चन्द्र मंडल को वहीँ फोड़ के गगना मेँ पिली ॥७॥
राग और रागिनी मैँने सुने अन्तर जाकर ।
मेरे नज़दीक हुए हिन्दु मुसलमाँ काफ़िर ॥८॥

शब्द १३२ (मे० वा० ४)

हेरी तुम कैसी हो री जग विच भरमन हारी ॥टेक॥
जीव कल्यान की सुद्ध न लीनी, दिन दिन मोह जाल विस्तारी ॥१॥
काम क्रोध के धक्के खाती, लोभ मोह सँग सहो दुख भारी ॥२॥

जहाँ जहाँ आसा सुख की धारी, वहाँ वहाँ झट के छिन छिन खारी ॥३

निसि दिन सब जग जाता देखो, अपनी मौत की सुद्ध बिसारी ॥४

जल्दी चेत करो सतसंगत, गुरु की दया ले काज सँवारी ॥५॥

भक्ति भाव अब मन में धारो, जीते जी कुछ काज बनारी ॥६॥

ले उपदेश करो अभ्यासा, मन के सब ही विकार निकारी ॥७॥

राधास्वामी चरन धार लो मन में, मेहर से भौजल पार उतारी ॥८

शब्द १३३ (सा० ब०)

स्वामी सुनो हमारी बिनती, मैं करूँ तुम्हारी बिनती ॥१॥

मेरे औगुण मत करो गिनती, मैं तन मन अपना हनती ॥२॥
मैं किंकर कुटिल कुपंथी, मैं हीन करूँ अति चिंती ॥३॥
महिमा अगम तुम्हारी सुन्ती, तुम दयाल दाता निज संती ॥४॥
नित कुमति जाल उरझंती, तुम समरथ पुरुष महामतवंती ॥५॥
मैं बिरह अग्नि विच रहूँ जलंती, क्योंकर भौसागर पार परंती ॥६
मेरी सुरत करो सतवंती, तुम चरण सरण की रहूँ दृढ़ वंती ॥७॥
सब कर्म धर्म ज्यों दाल दलंती, मुझे करो भक्त कुलवंती ॥८॥
रोग सोग दुख रहूँ सहन्ती, दूर करो ऐसी मान महन्ती ॥९॥

शब्द १३४ (प्रे० भा० २)

सुरतिया तड़प रही गुरु दरस बिना ॥१॥
बिरह अगिन हिये मेँ नित सुलगत, चैन न पावत रैन दिना ॥२॥
ब्याकुल मन और चित्त उदासा, जगत किरत सँग सहूँ तपना ॥३
राधास्वामी दयाल सुनो मेरी बिनती, दर्शन दो मोहिँ कर अपना ४
जिस दिन दरस भाग से पाऊँ, तन मन वारूँ और धना ॥५॥
या जग मेँ मोहिँ जान पड़ी अब, राधास्वामी बिन नहिँ
कोइ अपना ॥६॥
याते सरन गहूँ राधास्वामी, सेवा करूँ गुरु भक्त जना ॥७॥

यही उपाव कहा सन्तन ने, यही जतन कर मेरे मना ॥८॥

राधास्वामी भाग जगाया मेरा, सुख पाया मैं आज घना ॥९॥

शब्द १३५ (प्रे० बा० २)

सुरतिया भाग भरी आज गुरु दरशन रस लेत ॥१॥

जगत राग तज भाव हिये धर, गुरु सँग करती हेत ॥२॥

सतगुरु बचन अधिक मन भाये, सुनती चित से चेत ॥३॥

उमँग उमँग कर तन मन धन को, वार चरन पर देत ॥४॥

प्रेम सहित गुरु जुगत कमाती, डारत मन को रेत ॥५॥

चित में धर बिस्वास गुरू का, जीत काल से खेत ॥६॥
शब्द डोर गह चढ़त अधर में, तजत श्याम पहुँची पद सेत ॥७॥
सब मत के सिद्धान्त अस्थाना, रह गये नीचे ब्रह्म समेत ॥८॥
राधास्वामी दया सम्हारत, पाय गई घर अद्भुत नेत ॥९॥

शब्द १३६ (प्रे० बा० ३)

गुरु प्यारे की छबि पर बल बल जाउँ ॥टेक॥
रूप अनूप देख हरषानी, सोभा वाकी कस कह गाउँ ॥१॥
प्रीत धसी अब हिये अंतर में, निस दिन रूपहि रूप धियाउँ ॥२॥

तन मन से हुई गुरु की दासी, गुरू गुरू मैं गुरू मनाउँ ॥३॥
कौन सके गुरु महिमा गाई, कहत कहत मैं कहत लजाउँ ॥४॥
अचरज दरस दिखाया प्यारे, दया मेहर अब किसे जनाउँ ॥५॥
वाह वाह मेरे गुरू दयाला, चरनन मैं नई प्रीत जगाउँ ॥६॥
मैं तो निबल निकाम अजाना, यही हवस मन माहिं समाउँ ॥७॥
क्या सेवा कर गुरू रिझाऊँ, भक्ति भाव क्या क्या दिखलाउँ ॥८॥
दया करो राधास्वामी गुरु प्यारे, मैं अब राधास्वामी
राधास्वामी गाउँ ॥९॥

शब्द १३७ (मे० बा० ३)

अरी हे सुहागन हेलो तू बड़ भागन भारी तोहि मिल गये
निज भरतारा ॥टेक॥

तू करै आनंद प्रीतम साथा, चरनन में तेरा मन रहे राता।
तोहि मिल गये गुरु दातारा ॥१॥

मैं पड़ी आय यहाँ भूल भरम में, अटक रही थोथे करम धरम में।
भेद न पाया सच करतारा ॥२॥

अब करो मदद मेरी तुम मिलकर, सतगुरु पै ले चलो दया कर।
वे करैं मेहर अपारा ॥३॥

दुख सुख सहत रहूँ मैं भारी, बिन प्रीतम मैं रहूँ दुखारी ।
गुरु मोहिं देहिं सहारा ॥४॥
प्रीतम का मोहिं भेद बतावैं, मिलने की मोहिं जुगत लखावैं ।
मिले घट शब्द अधारा ॥५॥
गुरुसरूप हिये माहिं धियाऊँ, मेहर पाय सुत अधर चढ़ाऊँ ।
निरखूँ बिमल बहारा ॥६॥
अस करनी कर मिलूँ पिया से, राधास्वामी चरण पकड़ हिया जिया से । पहुँचूँ धुर दरबारा ॥७॥

सतगुरु दृष्टि मेहर की कीनी, चरन सरन मोहिं निज कर दीनी ।

छिन में काज सँवारा ॥८॥

सुरत चढ़ाय अधर पहुँचाई, घट में राधास्वामी दरस दिखाई ।

हुआ अब जीव उधारा ॥९॥

शब्द १३८ (प्रे० भा० ३)

सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी आज जग जीव उधार कराय

रहेरी ॥१॥

चार लोक मेँ वजी है वधाई, मिल हंस सभा गुन गाय रहेरी ॥२॥
घन गरज गरज वजा दया का नगारा, काल करम मुरझाय रहेरी ॥३॥
अमृत धार लगी घट झिरने, धुन घंटा संख सुनाय रहेरी ॥४॥
धन धन भाग जगा जीवन का, जो गुरु दरशन पाय रहेरी ॥५॥
कर सतसंग मिला रस भारी, प्रीत प्रतीत वढ़ाय रहेरी ॥६॥
सुरत शब्द का दे उपदेशा, घट मेँ सुरत चढ़ाय रहेरी ॥७॥
आरत कर गुरु लीन रिझाई, तन मन धन सब वार रहेरी ॥८॥
हुए प्रसन्न राधास्वामी गुरु प्यारे, उन सतलोक पठाय रहेरी ॥९॥

शब्द १३८ (मे० बा० १)

सखीरी मोहिँ क्योँ रोको मैं तो जाऊँगी सतगुरु पास ॥१॥
सतगुरु मेरे अधर विराजेँ, वहीँ संतन का वास ॥२॥
पिंड अंड ब्रह्मंड के पारा, सत्त अलख और अगम निवास ॥३॥
छवि प्रीतम की महा मोहनी, महलन अजब उजास ॥४॥
जगत जीव सब हुए हैं बावरे, नहिँ करेँ चरन विस्वास ॥५॥
धन अरु मान भोग रस चाहेँ, सब पड़े काल की फाँस ॥६॥
उनका संग करूँ नहिँ कबहीँ, जग से रहूँरी उदास ॥७॥

सतगुरु प्रीतम जिया के प्यारे, उन सँग करूँरी बिलास ॥८॥
चरन कँवल मेरे प्राण अधारे, करते हिये में बास ॥९॥
राधास्वामी धनी हमारे, करिहैं पूरन आस ॥१०॥

शब्द १४० (प्रे० बा० २)

सुरतिया भाव भरी अब आई गुरु के द्वार ॥१॥
सतसँग करत मैल मन धोवत परमारथ की पाई चार ॥२॥
प्रीत प्रतीत चरन में धारत, खोजत घर की बार ॥३॥
सुमिरन ध्यान करत निशि बासर, मांजत मन का मार ॥४॥

शब्द संग अब सुरत लगावत. खोलत घट का पाट ॥५॥

धुन की डोर पकड़ सुर्त चालत. सहस कँवल में बाँधत ठाट ॥६॥

घंटा संख शब्द धुन गाजे. जहाँ बलत जोत की लाट ॥७॥

राधास्वामी दया विचारी. दिये करम सब काट ॥८॥

चरन सरन दे मोहिं अपनाया. खोल दिये अब सभी कपाट ॥९॥

राधास्वामी चरन धार अब हिये में. निरभय सोऊँ बिछाये खाट १०

शब्द १४१ (प्रे० बा० २)

सुरतिया भजन करत हुई घट में आज निहाल ॥१॥

सतगुरु वचन धार हिये अंतर, सुनत शब्द धुन सुरत सम्हाल ॥२

प्रीत प्रतीत गुरू चरनन मैं, नित्त बढ़ावत होय खुश हाल ॥३॥

जगत किरत से हुई उदासा, छिन छिन सुमिरत गुरू दयाल ॥४॥

उमँग उमँग गुरु सतसँग चाहत, तोड़ फोड़ सब माया जाल ॥५॥

विघन लगाय काल उलझावत, काम क्रोध की डारत पाल ॥६॥

मैं राधास्वामी बल हिये धर अपने, मन इच्छा को मारूँ हाल ॥७

मेहर बिना कुछ बनि नहिँ आवे, दया करो राधास्वामी कृपाल ८

करम काट सुत अधर चढ़ाओ, दूर करो यह सब जंजाल ॥९॥

दीन होय तुम सरना आई, राधास्वामी करो मेरी प्रतिपाल ॥१०॥

शब्द १४२ (मे० वा० ३)

दया गुरु क्या करूँ बरनन अहा हाहा ओहो होहो ॥१॥
लगाया मोहिँ निज चरनन, अहा हाहा ओहो होहो ॥२॥
दिखाया घट में एक गुलशन, अहा हाहा ओहो होहो ॥३॥
सुनी जहाँ शब्द धुन घन घन, अहा हाहा ओहो होहो ॥४॥
वहाँ से आगे पग धारन, अहा हाहा ओहो होहो ॥५॥
करत रही सुर्त गुरु दर्शन, अहा हाहा ओहो होहो ॥६॥

चरन पर वार रही तन मन, अहा हाहा ओहो होहो ॥७॥
खेलती सुन में सँग हंसन, अहा हाहा ओहो होहो ॥८॥
भँवर होय सत्तपुर धावन, अहा हाहा ओहो होहो ॥९॥
परस राधास्वामी हुई पावन, अहा हाहा ओहो होहो ॥१०॥

शब्द १४३ (सा० व०)

देवरी सखी मोहिँ उमँग बधाई, अब मेरे आनँद उर न समाई ॥१॥
छिन छिन हरखूँ पल पल निरखूँ, छबि राधास्वामी मोसे कही न जाई ॥२॥
आरत थाली लीन सजाई, प्रेम सहित रस भर भर गाई ॥३॥

चरण सरण गुरु लाग बढ़ाई, अधिक बिलास रहा मन छाई ॥४॥
कहा कहूँ वह घड़ी सुहाई, सुरत हंसनी गई है लुभाई ॥५॥
शब्द गुरू धुन गगन सुनाई, अमी धार धुर से चल आई ॥६॥
रोम रोम और अँग अँग न्हाई, बरण बिनोद कहूँ कस भाई ॥७॥
लिख लिख कर कुछ सैन जनाई, जानेंगे मेरे जो गुरु भाई ॥८॥
राधास्वामी कहत बनाई, चार लोक में फिरी है दुहाई ॥९॥
सत्त नाम धुन बीन बजाई, काल बली अति मुरछा खाई ॥१०॥
अलख अगम दोउ मेहर कराई, राधास्वामी दरस दिखाई ॥११॥

शब्द १४४ (प्रे० बा० १)

सखीरी मेरे प्यारे का कर दीदार। सखीरी उन चरनों का कर आधार ॥१॥

सखीरी मेरे प्यारे की देख बहार। सखीरी उन नैनों को निरख निहार ॥२॥

सखीरी उस मुखड़े पै जाउँ बलिहार। सखीरी मैं तो तन मन देउँगी वार ॥३॥

सखीरी उन महिमा अपर अपार। सखीरी तोहि क्यों नहिं आवे प्यार ॥४॥

सखीरी अब छोड़ो जगत लवार । सखीरी सुन बचन सम्हार सम्हार ॥५॥
सखीरी तोहि वोही उतारें पार । गावो गुन उनका बारंबार ॥६॥
वही हैं सब के सत करतार । रहो तुम दमदम शुकर गुज़ार ॥७॥
सखीरी तन मन से हो जा न्यार । निरख नव हिये में अजब बहार ॥८॥
खिला तेरे घट में एक गुलज़ार । बजें जहाँ बाजे अनेक प्रकार ॥९॥
मृदंग और घंटा सारंगसार । बीन और मुरली करत पुकार ॥१०॥
पकड़ राधास्वामी चरन सम्हार । मेहर से पहुँचो धुर दरबार ११

शब्द १४५ (प्रे० बा० १)

संत रूप औतार राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥१॥
जग आए कुल करतार, राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥२॥
भक्तिदान दिया सार, राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥३॥
जगजीवन लिया है उबार, राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥४॥
सुरत शब्द मतधार, राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥५॥
काल कर्म दिये जार, राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥६॥
मोहिँ चरनन लिया है लगाय, राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥७॥

मोहिँ गोद में लिया है बिठाय, राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥८॥
मैं तो तन मन देउँगी वार, राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥९॥
मैं तो छिन छिन जाऊँ बलिहार, राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥१०॥
मेरे तन मन सुरत अधार, राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥११॥

शब्द १४६ (मे० बा० १)

सुरत सखी आज उमँगत आई। दीन लीन चित आरत लाई ॥१॥
बिरह अनुराग थाल कर लाई। प्रेम भक्ति की जोत जगाई ॥२॥
मन अंतर मेरे अधिक हुलासा। कस देखूँ गुरु चरन बिलासा ॥३॥

नित गुरु चरनन बिनती धारी । खोलो घट में वज्र किवाड़ी ॥४॥
रूप अनूप देख हिये हरखूँ । दया मेहर स्वामी घट में परखूँ ॥५॥
तुम दाता स्वामी अपर अपारी । मैं हूँ दीन अधीन बिचारी ॥६॥
किरपा कर मोहिं दरशन दीजे । छिन छिन सुरत अमीरस भींजे ॥७
भूल चूक मेरी चित्त न लाओ । तुम दाता मेरे दिल दरियाओ ॥८॥
काल करम मोहिं बहु दुख दीना । हार पड़ी आए अब तुम सरना ॥९
तुम दाता मेरे पिता दयाला । चरन सरन दे करो प्रतिपाला ॥१०॥
हित चित से यह आरत गाई । राधास्वामी प्यारे हुए सहाई ॥११॥

शब्द १४७ (प्रे० बा० २)

सुरतिया सोच करत अब किस विधि उतरूँ पार ॥१॥

गुरु भेदी ने पता बताया, सुरत शब्द मारग रहो धार ॥२॥

सतसँग करो वचन चित धारो, मन इंद्रिन को रोको झार ॥३॥

गुरु परतीत प्रीत हिये धर कर, करनी करो सम्हार ॥४॥

सुन अस वचन उमँग हुई भारी, पहुँचा गुरु दरबार ॥५॥

वचन सुनत मन निश्चय बाढ़ा, संशय भरम निकार ॥६॥

भेद पाय अभ्यास करूँ नित, तन मन गुरु पर वार ॥७॥

सरन सम्हार चरन दृढ़ पकड़ूँ, सहजहि होय उद्धार ॥८॥

राधास्वामी गतमत अगम अपारा, राधास्वामी शब्द सार का सार ॥९॥

यह निज घर बड़भागी पावे, सब से होय नियार ॥१०॥

मुझ ग़रीब की खूब सुधारी, राधास्वामी परम पुरुष दातार ॥११॥

शब्द १४८ (प्रे० बा० २)

सुरतिया सुनत रही धुन शब्द निरख नभ द्वार ॥१॥

संत बचन को गुनती हर दम, शब्द का करत बिचार ॥२॥

घट का भेद दिया नहिँ कोई, खोजत रही सब से हरबार ॥३॥

साध मिले जब गुरु के भेदी, उन कहा संत मत सार ॥४॥
ले जुगती करती अभ्यासा, मन और सुरत सम्हार ॥५॥
मन में पूरी शान्ति न पाई, आई गुरु दरबार ॥६॥
सुन सुन भेद मगन हुई मन में, घट में पाया मारग सार ॥७॥
निश्चल चित होय सुरत लगाई, हरख रही सुन धुन झनकार ॥८॥
नित अभ्यास करूँ मैं घट में, प्रीत प्रतीत सँवार ॥९॥
आरत कर राधास्वामी रिझाऊँ, पाऊँ उनकी मेहर अपार ॥१०॥
काल जीत जाऊँ भौजल पारा, राधास्वामी चरन करूँ दीदार ॥११॥

शब्द १४८ (प्रे० बा० २)

सुरतिया फूल रही सतगुरु के दर्शन पाय ॥१॥

भाव भक्ति से पूजा करती, मत्था टेक चरन परसाय ॥२॥

गंध सुगंध फूल की माला, सतगुरु गल पहिनाय ॥३॥

अमृत रस जल भर के लाई, चरनामृत कर पियत अघाय ॥४॥

मुख अमृत बिनती कर लेती, उमँग सहित हिये प्यास बुझाय ॥५॥

व्यंजन अनेक प्रीत कर लाई, गुरु सन्मुख धरे थाल भराय ॥६॥

प्रेम सहित गुरु आरत करता, दृष्टि से दृष्टि मिलाय ॥७॥

सतगुरु दया दृष्टि जब डारी, मगन होय रही उन गुन गाय ॥८॥
सब सतसंगी और सतसंगिन, दृष्टि जोड़ दरशन रस पाय ॥९॥
बटा परशाद हरख हुआ भारी. सब मिल गुरु परशादी पाय ॥१०॥
कभी कभी अस औसर भल पावन, सब मिल राधास्वामी चरन धियाय ॥११॥

शब्द १५० (प्रे० बा० २)

सुरतिया ध्यान धरत गुरु रूप चित्त में लाय ॥१॥
सेवा करत मानसी गुरु की, मन में निन नया भाग जगाय ॥२॥
सतगुरु रूप ध्यान धर हिये में, बदना मल अस्नान कराय ॥३॥

वस्तर भाव प्रीत पहला कर, चन्दन केसर तिलक लगाय ॥४॥
पलँग बिछाय बिठावत गुरु को, उमँग उमँग उन आरत गाय ॥५॥
ताक नैन गुरु दर्शन करती, दृष्टि समेट मध्य तिल लाय ॥६॥
हरखत मन अस जुगत सम्हारत, सुनत शब्द अति आनँद पाय ॥७
कोइ दिन अस मन चित ठहरावत, सहज सरूप और धुनरस पाय ॥८॥
नित प्रति भजन ध्यान अस करती, सुरत चढ़ी अब घट में धाय ॥९
शब्द शब्द धुन सुनत अधर में, राधास्वामी चरनन पहुँची जाय १०
मेहर दया राधास्वामी की पाई, तब अस कारज लिया बनाय ॥११॥

शब्द १५१ (प्रे० बा० २)

सुरतिया रटत रही पिया प्यारा नाम सही ॥१॥
उमँग भरी सतसँग में आई, मान लाज दोउ त्याग दई ॥२॥
समझ बूझ गुरु बचन सम्हारे, गुरु चरनन की टेक गही ॥३॥
सार भेद ले करत कमाई, शब्द अमीरस चाख रही ॥४॥
गुरु चरनन में किया बिश्वासा, दिन दिन जागत प्रीत नई ॥५॥
गुरु दर्शन अस प्यारा लागे, जस माता को पुत्र कही ॥६॥
बिन दर्शन व्याकुल रहे तन में, दरस पाय जब मगन भई ॥७॥

ऐसी लगन देख गुरु प्यारे, निज चरनन की सरन दई ॥८॥
सरन पाय अब हुई अचिंती, दिन दिन प्रेम जगाय रही ॥९॥
गुरु परताप सुरत अब चेती, शब्द सँग चढ़ अधर गई ॥१०॥
राधास्वामी चरनन जाय मिली अब, महिमा उनकी कौन कहो ॥११॥

शब्द १५२ (प्रे० बा० २)

सुरतिया परख रही घट में गुरु दया अपार ॥१॥
निपट अजान चरन में आई, गुरु कीना मुझ से प्यार ॥२॥
बालक सम गुरु मोहिं निहारा, चरन ओट दे लिया सम्हार ॥३॥

किरपा कर मोहिँ जुगत बताई, शब्द भेद दिया सत करतार ॥४॥
समझ बूझ मोहिँ आगहि दीनी, संशय भरम दिया सब टार ॥५॥
प्रेम सहित गुरु बानी गाऊँ, राधास्वामी नाम जपूँ हरबार ॥६॥
प्रेमी जन की सेवा करती, अरु गुरु चरनन भाव और प्यार॥७॥
सतसँग बचन उमँग से सुनती, अपनी मन में कर बीचार ॥८॥
राधास्वामी दया भरोसा भारी, धार रही परतीत मझार ॥९॥
सब बिधि काज सँवारें मेरा, राधास्वामी अपनी ओर निहार ॥१०
राधास्वामी परम दयाल कृपानिधि, अपनी दया से लिया
मोहिँ उबार ॥११॥

शब्द १५३ (प्रे० बा० ३)

गुरु प्यारे करैं आज जगत उद्धार ॥टेक॥
जीवन को अति दुखी देखकर, उमँगी दया जाका वार न पार ॥१॥
नर सरूप धर जग में आये, भेद सुनाया घर का सार ॥२॥
दीन होय जो चरनन लागे, उन जीवन को लिया सम्हार ॥३॥
बाक़ी जीव जंतु पर जग में. मेहर दृष्टि करी गुरू दयार ॥४॥
जस तस उनका काज बनाया, अपनी दया से किरपा धार ॥५॥
कोई जीव ख़ाली नहिँ छोड़ा, सब पर मेहर की दृष्टी डार ॥६॥

कुल मालिक राधास्वामी प्यारे, जीव जंतु सब लीने तार ॥७॥

कौन सके उन महिमा गाई, शेष महेश रहे सब हार ॥८॥

दोउ कर जोर करूँ मैं बिनती, शुकर करूँ मैं बारम्बार ॥९॥

राधास्वामी सम समरथ नहिँ कोई, राधास्वामी करें अस दया अपार ॥१०॥

मैं बालक उन सरन अधीना, चरन लगाया मोहिँ कर प्यार ॥११॥

शब्द १५४ (प्रे० बा० ३)

सतगुरु प्यारे ने सुनाई जुगत निराली हो ॥टेक॥

सुन गुरु वचन हुई परतीती, गुरु ने सिखाई भक्ती रीती।
लीना मोहिँ सम्हालो हो ॥१॥

सतसँग करत भाव बढ़ा दिन दिन, प्रीत लगी अब राधास्वामी
चरनन। खुल गया भेद दयाली हो ॥२॥

उमँग उठी सेवा की भारी, तन मन धन गुरु चरनन वारी।
हो गई आज निहाली हो ॥३॥

शब्द भेद गुरु दीन जनाई, धुन सँग सूरत उमँग लगाई।
निरखा रूप जमाली हो ॥४॥

मन इच्छा गुरु दीन सुलाई, काल करम बल सबहि नसाई।
विघन बिकार निकाली हो ॥५॥
मेहर से दिया गुरु खेत जिताई, सरन धार गुरु चरन समाई।
मिटगइ ख़ाम ख़याली हो ॥६॥
सतगुरु सुरत सिँगार कराया, राधास्वामी प्यार से गोद बिठाया।
नितघट होत दिवाली हो ॥७॥
दरशन कर मेरी गति हुई कैसी, मीन मगन होय जल मेँ जैसी।
दूर हुए दुख साली हो ॥८॥

प्यारे राधास्वामी गुन कस कह गावा, संत रूप धर काज बनावा। अटल जोत घट बाली हो ॥९॥

आओरे आओ जिव सरनी आओ, राधास्वामी चरनन प्रेम बढ़ाओ। छूटे सबहि बेहाली हो ॥१०॥

मेहर करैं राधास्वामी गुरु प्यारे, छिन छिन तुमको लेहिँ उबारे। गत पाओ आज मराली हो ॥११॥

शब्द १५५ (प्रे० बा० ३)

अरी हे पड़ोसन प्यारी कोइ जतन बतादे कस मिले प्रीतम प्यारा ॥टेक॥

बिरह अगिन नित भड़कत तन में, पिया की पीर नित खटकत
मन में। सहत रहूँ दुख भारा ॥१॥
कोई वैद्द मिले जब भारी, रोग बूझ दें दवा बिचारी।
तब कुछ पाऊँ सहारा ॥२॥
सतगुरु ऐसे वैद्द कहावें, प्रीतम से वे तुरत मिलावें।
दें निज चरन अधारा ॥३॥
चलो पड़ोसिन गुरु ढिंग जावें, बिनती कर निज काज बनावें।
छोड़े जग अँधियारा ॥४॥

सतगुरु हैं वे दीन दयाला, मेहर से छिन में करैं निहाला ।
अस होय जीव गुज़ारा ॥५॥
प्रेम प्रीत गुरु चरनन लावैं; आरत कर उन बहुत रिझावैं ।
तन मन चरनन वारा ॥६॥
भेद सुना मैं अति से भारी, प्रीतम आपहि गुरुतन धारी ।
करते जीव उबारा ॥७॥
कर पहिचान लिपट रहैं चरनन, प्रीत प्रतीत बढ़ावैं छिन छिन ।
तज सब भरम पसारा ॥८॥

राधास्वामी धाम से सतगुरु आवैँ, जीव दया वे हिये बसावैँ।
उन गत अगम अपारा ॥९॥
भाग उदय हुए आज हमारे, मिल गये राधास्वामी प्रीतम प्यारे।
लखा निज रूप नियारा ॥१०॥
आओ पड़ोसिन गावो बधाई, राधास्वामी महिमाँ अगम अथाई।
दम दम शुकर विचारा ॥११॥

शब्द १५६ (मे० बा० ४)

अचरज आरत गुरु की धारूँ, उमंग नई हिये छाय रहीरी ॥टेक॥

सतसंगी सब हरखत आये, सतसंगन उमगाय रहीरी ॥१॥
अजब समा क्या बरन सुनाऊँ, चहुँ दिस आनँद गाय रहेरी ॥२॥
बस्तर भोजन बहु बिध साजे, देख भाव हरखाय रहेरी ॥३॥
बढ़त हुलास हिये में भारी, धन फल फूल लुटाय रहेरी ॥४॥
धूम मची आरत की भारी, बहु जिव अब घिर आय रहेरी ॥५॥
सकल समाज हरख रहा मन में, उमँग बधाई गाय रहेरी ॥६॥
अस अस देख बिलास नवीना, सब जीव अचरज लाय रहेरी ॥७॥
राधास्वामी दयाल प्रसन्न होय कर, मेहर दया फ़रमाय रहेरी ॥८॥

अपनी दया से काज बनाया, आपहि करनी कराय रहेरी ॥९॥
सेव कराय दया से अपनी, जन का भाग जगाय रहेरी ॥१०॥
राधास्वामी मेहर से हिये में सबके, छिन छिन प्रेम बढ़ाय रहेरी ॥११

शब्द १५७ (प्रे० बा० ४)

सुरत पियारी शब्द अधारी, करत आज सतसंग ॥१॥
बिरह अंग ले सन्मुख आई, चित में धार उमंग ॥२॥
जगत भोग से कर बैरागा, तज दिया माया रंग ॥३॥
रहत उदास चित्त में निसदिन, क्योँ कर छुटे कुसंग ॥४॥

बिघन अनेक डालता काला, माया करती कारज भंग ॥५॥
भजन ध्यान कुछ बन नहिँ आवत, मनुआँ रहता तंग ॥६॥
दया करो गुरु लेव सम्हारी, मोड़ो या का अंग ॥७॥
चरन सरन गुरु दृढ़ कर धारे, घट में होय असंग ॥८॥
शब्द माहिँ नित रहे लौलीना, सुरत चढ़े मेरी जैसे पतंग ॥९॥
ऐसी दया करो मेरे प्यारे, भक्ति करूँ मैं होय निसंक ॥१०॥
राधास्वामी चरनन बासा पाऊँ, माया के उतरें सबही कुरंग ॥११

शब्द १५८ (मे० बा० ४)

प्रेम भरी भोली बाली सुरतिया, पल पल गुरु को रिझाय रही ॥१॥

दीन होय लागी सतसंग में, बचन सुनत हरखाय रही ॥२॥

लिपट रही चरनन में हित से, हिये गुरु रूप बसाय रही ॥३॥

शब्द उपदेश पाय मगनानी, धुन में सुरत जमाय रही ॥४॥

गुरु की दया परख अंतर में, उमँग उमँग गुन गाय रही ॥५॥

प्रेम बढ़ा अब हिये अंतर में, तन मन वार धराय रही ॥६॥

गुरु का सतसँग लागा प्यारा, दर्शन को नित ध्याय रही ॥७॥

जस जल मीन हरख दरशन कर. हिये का कँवल खिलाय रही ॥८

खेलत बिगसत संग गुरू के. मेहर दया नित चाह रही ॥९॥

प्रेमी जन सँग नाचत गावत, सुध बुध सब बिसराय रही ॥१०॥

राधास्वामी दयाल लिया अपनाई, नित नया प्रेम जगाय रही ॥११

शब्द १५८ (प्रे० बा० १)

आज मेरे आनंद आनंद भारी, मिले मोहिँ सतगुरु पुरुष अपारी ॥१

दया कर दरशन सहज दियारी, निरख छबि छिन में मन मोहारी २

बचन सुन हिये में प्रेम बढ़ारी, शब्द धुन घट में कीन उजारी ॥३॥

जगत मोहिँ लागा अब सुपनारी, दया गुरु मेट दिया तपनारी ॥४॥
प्रेम मेरे हिये में उमँग रहारी, करूँ ऐसे गुरु की आरत भारी ॥५॥
थाल अब भक्ती लीन सजारी, शब्द धुन निर्मल जोत जगारी ॥६॥
गुरू मेरे अचरज वस्तर धारी, प्रेम अंग शोभा देखूँ भारी ॥७॥
हंस सँग गाऊँ आरत न्यारी, दरस गुरु करूँ सम्हार सम्हारी ॥८॥
सुरत की अजब लगी है तारी, मेहर गुरु कीनी आज करारी ॥९॥
पिंड तज चढ़ गई गगन अटारी, मानसर अन्तर धुन धर धारी ॥१०
महासुन चढ़ सतलोक सिधारी, पुरुष का रूप अनूप निहारी ॥११॥

अलख और अगम जाय परसारी, हुई राधास्वामी चरन दुलारी १२

शब्द १६० (प्रे० बा० १)

जगत में बहु दिन बीत सिराने, खोज नहिं पाया रहे हैराने ॥१॥

ढूँढ़ता आया तज घरबारा, मिला मोहि राधास्वामी गुरु दरबारा २

भेद सत पाया मैं उन पासा, मगन मन निसदिन देख बिलासा ॥३॥

करूँ हित चित से सतसँग सारा, जपूँ नित राधास्वामी नाम अपारा ॥४॥

ध्यान मैं लाऊ सतगुरु चरना, करूँ दृढ़ निसदिन राधास्वामी सरना ॥५॥

शब्द धुन सुनता घोरम् घोर, मोह जग डाला तोड़म् तोड़ ॥६॥
करूँ मैं आरत सतगुरु संगा, हुए अब करम भरम सब भंगा ॥७॥
दीन दिल दुरमत त्यागी भारी, चरन में लागी सुरत करारी ॥८॥
उमँग की थाली कर बिच लाया, प्रेम की जोत अनूप जगाया ॥९॥
गाऊँ गुरु आरत हंसन साथा, चरन मैं गुरु के राखूँ माथा ॥१०॥
हुए प्रसन्न राधास्वामी प्यारे, दया कर दीना पार उतारे ॥११॥
गाऊँ गुन उनका बारम्बारा, मिला मोहिँ संत मता निज सारा ॥१२

शब्द १६१ (प्रे० बा० १)

राधास्वामी चरन आइया जागे मेरे भाग।
दरशन कर हिये हरखिया, सतसंग में चित लाग ॥१॥
वचन सुनत चित मगन होय, दृढ़ परतीत सम्हार।
राधास्वामी चरन पर, तन मन देता वार ॥२॥
ऐसो संगत ना सुनी, ना कहीं आँखन दीठ।
राधास्वामी बल हिये धार कर, तोड़ूँ काल की पीठ ॥३॥

दम दम नाम पुकारता, छिन छिन धरता ध्यान ।
हिये गुरु रूप बसाय कर, रहता अमन अमान ॥४॥

गुरु से प्रीत बढ़ावता, चित चरनन लौ लीन ।
हिये से सेवा धारता, तन मन दीन अधीन ॥५॥

क्या माया मेरा कर सके, काल न सकता रोक ।
मेहर दया से पाइया, राधास्वामी चरनन जोग ॥६॥

भटक भटक भटकत फिरा, कहीँ न पाया ठाम ।
राधास्वामी चरनन आ पड़ा, हुआ चेरा बिन दाम ॥७॥

राधास्वामी से सतगुरु नहीं, राधास्वामी सा निज नाम ।
सुरत शब्द सम जोग नहिं, पाया भेद अनाम ॥८॥
भक्ति बिना कोइ ना तरे, गुरु बिन होय न पार ।
सतगुरु बिन सब जगत जिव, डूबे भौजल धार ॥९॥
प्रेम बिना नहिं पा सके, राधास्वामी का दीदार ।
यासे सतगुरु भक्ति कर, पहुँचो निज घर बार ॥१०॥
अब आरत गुरु धारता, प्रेम का थाल सजाय ।
उमँग हिये उमँगावता, बिरह की जोत जगाय ॥११॥

राधास्वामी हुए प्रसन्न अब, दृष्टि मेहर की कीन ।
प्रीत प्रतीत की दात दे, मोहिं अपना कर लीन ॥१२॥

शब्द १६२ (प्रे० भा० १)

सखीरी मेरे मन बिच उठत तरंग, करूँ गुरु आरत रंगा रंग ॥१॥
प्रेम की थाली कर बिच लाय, लाल और मोती संग सजाय ॥२॥
बिरह की जोत जगाऊँ आज, कँवल फुलवारी चहुँ दिस साज ॥३
अनेक रंग अंबर बस्तर लाय, अमी का भोग उमंग धराय ॥४॥
विविध अस आरत साज सजाय, सुरत मन नाचत हरखत गाय ॥५

हंस जहाँ मोहित देख बिलास, हिये बिच छिन छिन बढ़त हुलास ॥६

शब्द धुन झनकारत चहुँ ओर, अमीं रस बरखावत घनघोर ॥७॥

भीज रही सुरत रँगीली नार, रहा मन गोता खावत बार ॥८॥

धमक कर चढ़ गई फोड़ अकास, चमक कर पहुँची सतगुरु पास ९

प्रेम रँग भीज रही सुत नार, पाइया पूरन अब सिंगार ॥१०॥

हुए परसन गुरु दीन दयाल, लिया मोहिँ अपनी गोद बिठाल ११

भाग मेरा जागा आज अपार, मिले राधास्वामी निज दिलदार १२

शब्द १६३ (मे० वा० २)

सुरतिया सुमिर रही सतगुरु का छिन छिन नाम ॥१॥
प्रेम अंग ले पकड़े चरना, बिसर गये सब जग के काम ॥२॥
सतसँग में चित अति हुलसाना, पाया वहाँ आराम ॥३॥
गुरु दरशन बिन चैन न आवे, निरखत रहूँ छबि आठो जाम ॥४॥
हित कर करत बीनती गुरु से, देव गुरू अस अमृत जाम ॥५॥
रहूँ अचिंत होय मस्ताना, सुरत चढ़ाय लखूँ गुरु धाम ॥६॥
मेहर करो अस राधास्वामी प्यारे, मैं तुम्हरी चेरी बिन दाम ॥७॥

मेहर करी गुरु भेद सुनाया, शब्द शब्द का कहा मुक़ाम ॥८॥
विरह अंग ले करो अभ्यासा, सुरत लगाओ होय निसकाम ॥९॥
सहज सहज चढ़ चलो अधर में, निरखो त्रिकुटी गुरु का ठाम १०
वहाँ से सतगुरु दरस निहारो, राधास्वामी चरन करो विसराम ११
दया मेहर बिन काज न होई, राधास्वामी दया लेव संग साम १२

शब्द १६४ (प्रे० बा० २)

सुरतिया बोल रही जीवन को हेला मार ॥१॥
जो चाहो सच्चा निरवारा, सतगुरु सरन आओ धर प्यार ॥२॥

सतसंग कर गुरु बचन सम्हारो, जग का भय और भाव निकार ॥३॥
राधास्वामी चरनन धारो आसा, टेक पुरानी सब तज डार ॥४॥
करम भरम सब निष्फल जानो, बहिर मुख करनी देव बिसार ॥५॥
सुरत शब्द का ले उपदेशा, घट में करनी करो सम्हार ॥६॥
भोग बासना चित से टारो, त्यागो मन के सबही बिकार ॥७॥
धर परतीत करो गुरु सेवा, दिन दिन प्रेम जगावो सार ॥८॥
तब मन सुरत लगैं घट धुन में, देख अंतर बिमल बहार ॥९॥
गुरु बल हिये धर चढ़ैं अधर में, मगन होंय सुन धुन झनकार ॥१०

शब्द शब्द का निरख प्रकाशा. पहुँचे सुरत सेत दरबार ॥११॥
तब होवे सच्चा उद्धारा, राधास्वामी चरन निहार ॥१२॥

शब्द १६५ (मे० बा० २)

सुरतिया तोल रही गुरु बचन सार के सार ॥१॥
खोज करत सतसंग में आई, गुरु का दरस निहार ॥२॥
बचन सुनत मन शांती आई, मोह रही कर प्यार ॥३॥
जितने मते जगत में जारी, सबही थोथे जान असार ॥४॥
सत पद का कोइ भेद न गावे. जीव बहे चौरासी धार ॥५॥

सतगुरु मोहिँ घट भेद सुनाया, पता दिया मोहिँ निज घरबार ॥६

सुरत शब्द की राह लखाई, पकड़ चढ़ूँ अब धुन की धार ॥७॥

प्रीत प्रतीत चरन में धारूँ, करम धरम का पटकूँ भार ॥८॥

उमँग सहित करनी करूँ निसदिन, राधास्वामी चरन सरन आधार ॥९॥

संशै भरम उड़ाय दिये सब, गुरु चरनन पर तन मन वार ॥१०॥

दिन दिन भाग जगाऊँ अपना, सुरत शब्द की करती कार ॥११॥

मेहर करी राधास्वामी प्यारे, पार किया मोहिँ किरपा धार ॥१२

शब्द १६६ (प्रे० बा०)

सुरतिया याच रही गुरु चरन प्रेम की दात ॥१॥
उमँग भरी गुरु सन्मुख आई, दरशन कर हिये में हुलसात ॥२॥
सुन सुन बचन मगन हुई मन में, तोड़ा जगजीवन से नात ॥३॥
कुत संसारी अब नहिं भावे, करम धरम पर मारी लात ॥४॥
गुरु सँग प्रीत लगावत ऐसी, जस बालक माता के साथ ॥५॥
बिन दरशन अब चैन न आवे, और कहीं मन लगे न लगात ॥६॥
नित अभ्यास करत धर ध्याना, गुरु मूरत निज हिये बसात ॥७॥

छिन छिन घट में दरस निहारत, गुरु छबि देख चित्त मगनात ॥८॥
रसक रसक सुनती अनहद धुन, अमी धार नित सुन से आत ॥९॥
मन और सूरत चढ़त अधर में, शब्द शब्द पौड़ी दरसात ॥१०॥
अजब बिलास मिला अंतर में, उमँग उमँग गुरु के गुन गात ॥११॥
मेहर करी राधास्वामी गुरु प्यारे, प्रेम सहित उन चरन समात ॥१२

शब्द १६७ (प्रे० बा० २)

सुरतिया सेव रही गुरु चरन सम्हार ॥१॥
भक्ति भाव हिये माहिं बढ़ावत, धर चरनन में प्यार ॥२॥

सेवा करत उमँग से निसदिन, मन नहिँ लावे आर ॥३॥
लोक लाज की कान न लावे, हाज़िर रहे दरबार ॥४॥
कोइ कुछ कहवे मन नहिँ लावे, दीन अधीन पड़ी गुरुद्वार ॥५॥
करम भरम तज सरन सम्हारी, मन में निश्चय धार ॥६॥
सतसँग में मन चित हुलसाना, सुनत वचन गुरु सार ॥७॥
शब्द माहिँ नित सुरत लगावत, सुन अनहद झनकार ॥८॥
हिरदे में गुरु रूप बसावत, ध्यान धरत हरबार ॥९॥
सुमिरन नाम करे निशिवासर, राधास्वामी टेक अधार ॥१०॥

जगे भाग गुरु दरशन पाये, काल से तोड़ा नाता झाड़ ॥११॥
मेहर करी राधास्वामी दयाला, सहज किया भौसागर पार ॥१२॥

शब्द १६८ (प्रे० बा० २)

आज गावो गुरू गुन उमँग जगाय ॥टेक॥
दयाधार धुर घर के वासी, नर देही में प्रगटे आय ॥१॥
निज घर का मोहिं पता बताया, मारग का दिया भेद लखाय ॥२॥
भिन्न भिन्न निरनय मंज़िल का, मेहर से दीना खोल सुनाय ॥३॥
अपनी दया का दीन सहारा, मन और सूरत शब्द लगाय ॥४॥

करम भरम की फाँसी काटी, काल करम से लिया बचाय ॥५॥
प्रीत प्रतीत बढ़ाकर हिये मैं, दीना घर की ओर चलाय ॥६॥
जिन यह भेद सुना नहिं गुरु से, सो रहे माया सँग लिपटाय ॥७॥
जन्म जन्म वे दुख सुख भोगैं, भरमैं चारखान मैं जाय ॥८॥
दया मेहर का कस गुन गाऊँ, जस सतगुरु ने करी बनाय ॥९॥
किरपा कर मोहिं आपहि खींचा, और चरनन मैं लिया लगाय १०
जो अस मेहर न करते मुझपर, काल जाल मैं रहत फँसाय ॥११॥
मैं बलहीन करूँ क्या महिमा, राधास्वामी मेहर से लिया अपनाय १२

शब्द १६८ (प्रे० बा० ३)

सतगुरु प्यारे ने लखाया निज रूप अपारा हो ॥टेक॥

हद हद सब मत में गावें, बेहद रूप संत दरसावें।

माया ब्रह्म के पारा हो ॥१॥

रूप अरूप का भेद सुनावें, मायक रूप स्थिर न रहावें।

वह निज रूप नियारा हो ॥२॥

संतन निरमल देस जनाया, जहाँ नहिं काल करम और माया।

वह पद सार का सारा हो ॥३॥

सत्त पुरुष जहाँ सदा विराजैं, हंस मंडली अद्भुत राजैं।
करते प्रेम पियारा हो ॥४॥
जिन जिन यहाँ गुरु भक्ती धारी, सो पहुँचे सतगुरु दरबारी।
राधास्वामी चरन निहारा हो ॥५॥
संतन का भगवंत अविनासी, भेद भक्ति जहाँ वहाँ परकाशी।
सत्त पुरुष दरबारा हो ॥६॥
राधास्वामी धाम अनाम अपारा, जहाँ नहिं रंग रूप आकारा।
अभेद भक्ति जहाँ धारा हो ॥७॥

या विधि जो कोइ कार कमावे, परथम गुरु भक्ती चित लावे।
जग से हो जाय न्यारा हो ॥८॥
अंतर सतगुरु भक्ती साधे, सुरत शब्द मारग आराधे।
सोई जाय भौ पारा हो ॥९॥
सत्त पुरुष का दरशन पावे, वहाँ से राधास्वामी चरन समावे।
येही सत्त उधारा हो ॥१०॥
और मते सब काल पसारे, माया के कोई जाय न पारे।
करम भरम पचहारा हो ॥११॥

जो चाहो सच्चा उद्धारा, राधास्वामी मत धारो यह सारा ।
बारंबार पुकारा हो ॥१२॥

शब्द १७० (प्रे० बा० ३)

चलो आज गुरु दरबारा, जहाँ होवत सहज उधारा ॥टेक॥
मैं करम भरम भरमानी, भेषन में रही भुलानी ।
गुरु महिमा नेक न जानी, जो करें जीव निस्तारा ॥१॥
धुर दया हुई जब मुझपर, गुरु भेदी मिलिया आकर ।
उन महिमा कही जनाकर, गुरु चरन करो आधारा ॥२॥

सतगुरु फिर किरपा धारी, दिया भेद मोहिँ निज सारी।
सुत शब्द जुगत अति भारी, समझाई करके प्यारा ॥३॥
मन उमँग सहित घट लागा, सुन शब्द चढ़ा अनुरागा।
जग से हुआ चित वैरागा, गुरु रूप हिये में धारा ॥४॥
दरशन की उठी अभिलाषा, चल आई सतगुरु पासा।
सतसंग का देख विलासा, सुन सुन गुरु बचन सम्हारा ॥५॥
क्या महिमा सतसंग गाऊँ, या सम कोई जतन न पाऊँ।
मन के सब भरम हटाऊँ, गुरु अस्तुत करूँ सँवारा ॥६॥

गुरु निरख दीनता मेरी, करी मुझपर मेहर घनेरी ।
मैं हुई उन चरनन चेरी, तन मन धन गुरु पर वारा ॥७॥
मन हुआ प्रेम रस राता, गुरु सेव करत दिन राता ।
जगजीवन सँग नहिँ भाता. अब मिल गया सतसँग सारा ॥८॥
गुरु ध्यान धरत मन मगना, धुन सुनत चढ़त सुत गगना ।
सतसँग मैं निसदिन जगना, मिला राधास्वामी सरन सहारा ॥९
गुरु चरनन विनती धारी, मोहिँ लीजे वेग सुधारी ।
अपना कर दया विचारी, भौजल के पार उतारा ॥१०॥

बल काल करम का तोड़ो, सूरत निज चरनन जोड़ो ।
माया के परदे फोड़ो, हरखूँ लख धाम नियारा ॥११॥
राधास्वामी सतगुरु प्यारे, तुम गत मत अगम अपारे ।
मैं जिऊँ तुम नाम अधारे, दमदम तुम चरन निहारा ॥१२॥

शब्द १७१ (बा० व०)

गुरु मिले परम पद दानी, क्या गत मत उनकी करूँ बखानी ॥१॥
मैं अजान महिमा नहिं जानी, बिना मेहर क्योंकर पहिचानी ॥२॥
गति अति गोप न जाने बेदा, ज्ञान जोग कर मिले न भेदा ॥३॥

पद उन का इन से रहे दूरी, यह तो थक रहे काल हजूरी ॥४॥
वह दयाल पद अगम अपारा, तीन सुन्न आगे रहा न्यारा ॥५॥
संत बिना कोई भेद न जाने, उस घर से वह आय बखाने ॥६॥
मैं भी उन चरनन कर दासा, भई परतीत बँधी पद आसा ॥७॥
सुरत शब्द मारग मोहिं दीन्हा, किरपा कर अपना कर लीन्हा ॥८॥
नित अभ्यास करूँ मैं येही, इक दिन पाऊँ शब्द विदेही ॥९॥
सतगुरु मेरे परम दयाला, करूँ आरती होउँ निहाला ॥१०॥
आतम थाल परमातम जोती, सत्त नाम पद पोया मोती ॥११॥

भाव भक्ति से आरत कीनी, पद सतगुरु जल में भई मीनी ॥१२॥
यह आरत अब पूरण भई, आगे कुछ कहनी नहिँ रही ॥१३॥

शब्द १७२ (सा० ब०)

गुरु का दरस तू देखरी, तिल आसन डार ॥१॥
शब्द गुरू नित सुनोरी, मिल बासन जार ॥२॥
गुरु रूप सुहावन अति लगे, घट भान उजार ॥३॥
कँवल खिलत सुख पावई, भौंरा कर प्यार ॥४॥
गुरु ज्ञान न पाया हे सखी, जिन घट अँधियार ॥५॥

पूरा सतगुरु ना मिला, भरमत भौजार ॥६॥
म तो सतगुरु पाइया, जाऊँ वलिहार ॥७॥
ज्योँ चकोर चंदा गहे, रहूँ रूप निहार ॥८॥
सतगुरु शब्द स्वरूप हैँ, रह अर्श मझार ॥९॥
तूभी सुरत स्वरूप है, रहो गुरु की लार ॥१०॥
नैनन मेँ गुरु रूप है, तू नैन उघार ॥११॥
सरवन मेँ गुरु शब्द है, सुन गगन पुकार ॥१२॥
राधास्वामी कह रहे, यह मारग सार ॥१३॥
जो जो माने भाग से, सो उतरेँ पार ॥१४॥

शब्द १७३ (प्रे० वा० १)

गुरु दरशन मोहिँ अति मन भाये, वचन सुनत हिय प्रीत बढ़ाये ॥१॥
संगत देखी सब से न्यारी, पद ऊँचे से ऊँचा भारी ॥२॥
राधास्वामी धाम कहाई, जोत निरंजन जहाँ न जाई ॥३॥
महिमा बरनी न जाय अपारा, राधास्वामी चरनन जीव उबारा ॥४
सहज जोग राधास्वामी बतलाया, घट में दरशन गुरु दिखलाया ॥५
सुरत शब्द की राह बतलाई, प्रेम अंग ले करो चढ़ाई ॥६॥
मन और सुरत दोऊ उठ जागे, शब्द गुरू में हित से लागे ॥७॥

बड़े भाग राधास्वामी मत पाया, भटक भटक गुरु चरनन आया ॥८

आस भरोस धरूँ गुरु चरनन, हिया जिया वारूँ वारूँ तन मन ॥९॥

मेरे मन अस गुरु विस्वासा, करें मेहर दें अगम निवासा ॥१०॥

राधास्वामी बिन कोई और न जानूँ, प्रीत सहित उन आरत धारूँ ११

प्रेम अंग घट अंतर छाया, राधास्वामी दया प्रशादी पाया ॥१२॥

प्रीत प्रतीत दान मोहिं दीजे, न्यारा कर अपना कर लीजे ॥१३॥

चरन अधार जिऊँ मैं निसदिन, राधास्वामी राधास्वामी गाऊँ छिन छिन ॥१४॥

शब्द १७४ (प्रे० बा० २)

सुरतिया तरस रही, गुरु दरशन को दिन रात ॥१॥
जग व्योहार पड़ा अस पीछे, घर नहिँ छोड़ा जात ॥२॥
तड़प तड़प मन होय उदासा, रहे घट मेँ उकलात ॥३॥
बहु विधि कर मैँ जुगत उपाऊँ, पर कोई भी पेश न जात ॥४॥
सतसंग बिन मन चैन न पावे, चित मेँ रहूँ नित्त घबरात ॥५॥
संशय भरम उठावत काला, भजन ध्यान मेँ रस नहिँ पात ॥६॥
बिरह उठत नित हिय मेँ भारी, और कहीँ मन लगे न लगात ॥७॥

राधास्वामी से अब करूँ पुकारी, देव प्रेम की मोहि अब दात ॥८॥
जल्द जल्द मैं दर्शन पाऊँ, सतसँग में नये वचन सुनात ॥९॥
तन मन मेरे शांत धरावैं, दरशन और बचन रस पात ॥१०॥
जो अस मौज न होवे जल्दी, दूर करो मन के उत्पात ॥११॥
घट में नित मोहिं दर्शन दीजे, धुन सँग मन और सुरत लगात ॥१२
गुन गाऊँ तुम चरन धियाऊँ, प्यारे राधास्वामी मेरे पित और
मात ॥१३॥
दया दृष्टि से मोहिं निहारो, औगुन मेरे चित्त न लात ॥१४॥

शब्द १७५ (भा० व०)

राधास्वामी धरा नर रूप जक्त में, गुरु होय जीव चितायें ॥१॥
जिन जिन माना वचन समझ के, तिन को संग लगाये ॥२॥
कर सतसंग सार रस पाया, पी पी तृप्त अघाये ॥३॥
गुरु सँग प्रीत करी उन ऐसी, जस चकोर चंदाये ॥४॥
गुरु बिन कल नहिँ पड़त घड़ी इक, दम दम मन अकुलाये ॥५॥
जब गुरु दर्शन मिले भाग से, मगन होत जस बछड़ा गाये ॥६॥
ऐसी प्रीत लगी जिन गुरु सुख, सो सो गुरु अपनाये ॥७॥

तन की लगन भोग इन्द्री के, छिन में सब बिसराये ॥८॥
गुरु की सूरत बसी हिये में, आठ पहर गुरु संग रहाये ॥९॥
अस गुरु भक्ती करी जिन पूरी, ते ते नाम समाये ॥१०॥
स्वाँत बूँद जस रटत पपीहा, अस धुन नाम लगाये ॥११॥
नाम प्रताप सुरत अब जागी, तब बड़ शब्द सुनाये ॥१२॥
शब्द पाय गुरु शब्द समानी, सुन्न शब्द सत शब्द मिलाये ॥१३॥
अलख शब्द और अगम शब्द ले, निज पद राधास्वामी आये ॥१४
पूरा घर पूरी गत पाई, अब कुछ आगे कहा न जाये ॥१५॥

शब्द १७६ (बा० ब०)

आज बधावा राधास्वामी गाऊँ, चरण कँवल गुरु प्रेम बढ़ाऊँ ॥१
हर्ष अधिक अब हिये समाऊँ, राधास्वामी रूप चित्त में लाऊँ ॥२
आज दिवस मेरा भाग अनोखा, दरशन राधास्वामी मन को
पोखा ॥३॥
सतगुर पूरे अंग लगाया, राधास्वामी अचरज खेल दिखाया ॥४॥
बाजत घट में अनहद तूरा, राधास्वामी राधास्वामी खुला ज़हूरा ५
जगा भाग मेरा अति गंभीरा, राधास्वामी नाम कहत मन धीरा ॥६
खुल गये वज्र किवाड़ अर्श के, दर्शन पाये राधास्वामी पुर्ष के ॥७॥

सोभा अधिक कहाँ लग भाखूँ, राधास्वामी मूरत नैनन ताकूँ ॥८॥

दर्श अधार जिऊँ छिन छिन मैं, राधास्वामी गुन गाऊँ पल पल मैं ॥९

गुन गावत मन होत हुलासा, राधास्वामी चरन बँधी मम आसा १०

मीन मगन जस जल के माहीँ, राधास्वामी सरन छुटत अब नाहीँ ११

केल करूँ नित उनके संगा, राधास्वामी किये भर्म सब भंगा ॥१२॥

निर्मल होय चरण लिपटानी, राधास्वामी गति अति अगम बखानी ॥१३॥

आनँद मंगल अब रहा छाई, राधास्वामी आगे गाऊँ बधाई ॥१४

अजब बधावा राधास्वामी गाया, उलट पलट राधास्वामी रिझाया ॥१५॥

शब्द १७७ (सा० व०)

जीव चिताय रहे राधास्वामी, सतपुर निजपुर अगम अनामी ॥१॥
भाग उदे उन जीवन भारी, राधास्वामी जिन घर चरण पधारी ॥२॥
कौन कहे महिमा इस औसर, हारे ब्रह्मा विस्नु महेश्वर ॥३॥
एक एक जीव काज किया अपना, गुरु आरत कर हुए अति मगना ४
गुरु सँग हंस, फ़ौज चल आई, कर सन्मान हार पहिनाई ॥५॥
भोजन वस्त्र देख सब हरखे, अति कर प्रीत भाव इन परखे ॥६॥

हुये प्रसन्न सतगुरु अविनाशी, दिया दान किया सतपुर बासी ॥७॥
अन धन और संतान भोग रस, जक्त भोग और मिला जोग रस ॥८॥
पर किरपा सतगुरु अस कीन्हा, मोह न व्यापे जग नहिं फँसई ॥९॥
रहे सुरत निरमल गुरु साथा, शब्द मिले रहे चरनन माथा ॥१०॥
अपनी दया से गुरु दिया दाना, सेवक तो कुछ माँग न जाना ॥११॥
दया करें जब सतगुरु अपनी, बिना माँग करवावें करनी ॥१२॥
नाम अनाम पदारथ न्यारा, सो सतगुरु दीन्हा कर प्यारा ॥१३॥
अब देबे को कुछ न रहाई, सतगुरु ही तेरे हुए भाई ॥१४॥
राधास्वामी कहा बनाई, सदा रहे सत नाम सहाई ॥१५॥

शब्द १७८ (मे० बा० २)

सुरतिया संग भरी गुरु सन्मुख उमगत आय ॥१॥
दिन दिन प्रीत प्रतीत बढ़ावत, चरनन रही लिपटाय ॥२॥
साज सँवार करत गुरु भक्ती, नित नई प्रेम रीत दरसाय ॥३॥
मन इन्द्रियन से जूझ जूझ कर, लेती लूँट छुड़ाय ॥४॥
छिन छिन जोड़त सुरत शब्द में, धुन झनकार सुनाय ॥५॥
मेहर दया राधास्वामी की परखत, नित नया आनँद पाय ॥६॥
जब तब माया विघन लगावत, काल रहे मग में अटकाय ॥७॥

तवही चित्त उदास होय कर, गिरत पड़त धुन रस नहिँ पाय ॥८

गुरु से करे फ़रियाद घनेरी, क्योँ नहिँ मेरी करो सहाय ॥९॥

गुरु की दया सदा सँग रहती, मसलहत उन की बूझ न पाय ॥१०

अटक भटक जो मग मेँ भेँटत, देत नई बिरह उमँग जगाय ॥११॥

याते धर बिस्वास हिये मेँ, सूरत मन नित अधर चढ़ाय ॥१२॥

राधास्वामी मेहर दया से अपने, पूरा काज बनाय ॥१३॥

मैँ अति दीन निबल निर आसर, आन पड़ा उन की सरनाय ॥१४

प्रेम सहित नित आरत कर के, राधास्वामी लेउँ रिझाय ॥१५॥

शब्द १७८ (मे० वा० २)

सुरतिया उमँग भरी रही, गुरु चरनन लिपटाय ॥१॥

दया धार गुरु चरन पधारे, अचरज भाग जगाय ॥२॥

नित प्रति दरशन गुरु का करती, चरनाम्रत परशादी पाय ॥३॥

मैं तो नीच निकाम नकारा, चरन सरन दई मोहिं अपनाय ॥४॥

औगुन मेरे कुछ न विचारे, दिन दिन मेहर करी अधिकाय ॥५॥

दीन और हीन चीन्ह मोहिं सतगुरु, लीना अपनी गोद बिठाय ॥६

बिन करनी गुरु मेहर दया से, मन और सुरत दीन सिमटाय ॥७

अंतर में नित करत चढ़ाई, तन मन की सब सुध बिसराय ॥८॥
घट में देखूं अजब तमाशा, परमारथ में लाग बढ़ाय ॥९॥
मगन होय नित भाग सराहूँ, अचरज लीला देख हरखाय ॥१०॥
नित्त बिलास होत घर मेरे, सतसँग दिन दिन बढ़ता जाय ॥११॥
किरपा कर संयोग मिलाया, अस बड़ भाग कोइ बिरला पाय ॥१२॥
बिना माँग गुरु किरत करावैं, बिन याँचे दई न्यामत आय ॥१३॥
क्योंकर शुकराना करूँ उनका, मैं गुरु बिन कोइ और न ध्याय ॥१४
आरत कर राधास्वामी रिझाऊँ, राधास्वामी राधास्वामी
रहूँ नित गाय ॥१५॥

शब्द १८० (प्रे० भा० ३)

सावन मास मेघ घिर आये, गरज गरज धुन शब्द सुनाए ॥१॥
रिम झिम बरखा होवत भारी, हिये बिच लागी बिरह कटारी ॥२
प्रीतम छाय रहे परदेसा, बूझत रही नहीं मिला संदेसा ॥३॥
रैन दिवस रहुँ अति घबराती, कसक कसक मेरी कसके छाती ॥४॥
कासे कहूँ कोइ दरद न बूझे, बिन पिया दरश नहीं कुछ सूझे ॥५॥
चमके बीज तड़प उठे भारी, कस पाऊँ पिया प्रान अधारी ॥६॥
रोवत बीते दिन और राती, दरद उठत हिये में बहु भाँती ॥७॥

ढूँढत ढूँढ़त बन बन डोली, तब राधास्वामी,की सुन पाई बोली ॥८॥

प्रीतम प्यारे का दिया सँदेसा, शब्द पकड़ जाओ उस देसा ॥९॥

सुरत शब्द मारग दरसाया, मन और सुरत अधर चढ़वाया ॥१०॥

कर सतसंग खुले हिये नैना, प्रीतम प्यारे के सुने वहाँ बैना ॥११

जब पहिचान मेहर से पाई, प्रीतम आप गुरू बन आई ॥१२॥

दया करी मोहिं अंग लगाया, दुःख दरद सब दूर हटाया ॥१३॥

क्या महिमा मैं राधास्वामी गाऊँ, तन मन वारूँ बल बल जाऊँ ॥१४

भाग जगे गुरु चरन निहारे, अब कहूँ धन धन राधास्वामी प्यारे १५

शब्द १८१ (मे० बा० ४)

सुरतिया ध्याय रही गुरु रूप हिये धर प्यार ॥१॥
शब्द सुनत हरखत नित घट में. परखत मेहर अपार ॥२॥
मगन होय नित गुरु गुन गावत. हिये में करत पुकार ॥३॥
वाह वाह मेरे गुरु दयाला, वाह वाह मेरे पिता दयार ॥४॥
वाह वाह मेरे प्यारे राधास्वामी, वाह वाह मेरे सत करतार ॥५॥
जस जस मेहर करी मेरे ऊपर, कस कस गाऊँ तुम गुन सार ॥६॥
कहन कहन मोसे कहत न आवे, नित नित रहूँ मैं शुकर गुज़ार ॥७॥
लिपट रहूँ चरनन में हित से, कभी न छोड़ूँ अमृत धार ॥८॥

चित्त रहे चरनन लौ लीना, काल करम बैठे सब हार ॥९॥
मैं अति दीन हीन और निरबल, जियत रहूँ राधास्वामी आधार १०
केल करूँ नित उनके संगा, राधास्वामी बल ले रहूँ हुशियार ॥११
म बालक उन सरन अधारा, राधास्वामी किया मेरा निज उपकार ॥१२॥
आपही खैंच लिया सतसँग में, आप दिखाया निज दीदार ॥१३॥
राधास्वामी महिमा कहत न आवे, राधास्वामी राधास्वामी कहूँ हर बार ॥१४॥
चरन अमीँ रस पियत रहूँ नित, राधास्वामी प्रेम रहूँ सरशार ॥१५॥

शब्द १८२ (सा० व०)

आज मेरे धूम भई है भारी, कहूँ क्या राधास्वामी रूप निहारी ॥१॥
घाट अब होगया सुख मन जारी, आरती राधास्वामी करूँ सँवारी २
प्रेम रँग भीज गई सुत सारी, निरत सँग राधास्वामी कीन पुकारी ३
हुई जाय सुन में शब्द अधारी, चरण में राधास्वामी माथ धरारी ४
कहूँ क्या आरत गावत न्यारी, लगी मोंहिं राधास्वामी धुन अब प्यारी ॥५॥
अगम गत कैसे कोई बिचारी, रीत कुछ राधास्वामी अचरज धारी ६
छोड़ अब तन मन चढ़त अटारी, जहाँ राधास्वामी तख्त निहारी ७

टहल में रहती निसदिन ठाढ़ी, अमी रस राधास्वामी दीन अहारी ८
बढ़ा अब भाग अपार जगारी, तेज राधास्वामी बहुत बढ़ारी ॥९॥
कौन यह पावे घट उजियारी, दई राधास्वामी लाभ अपारी ॥१०
धुनन की होत सदा झनकारी, कीन राधास्वामी मोहिं अपनारी ११
इड़ा तज पिंगला खोज करारी, सिखर चढ़ राधास्वामी घोर
गुनारी ॥१२॥
सोहंग में बंसी आन पुकारी, अजब गत राधास्वामी देखी न्यारी १३
काल पुन हारा कर्म कटारी, लगी ऐसी राधास्वामी नाम कटारी १४
सत्त म्र गई सुरत पनिहारी, भरी राधास्वामी गगरी भारी ॥१५

हंसनी होगई हंसन प्यारी, पिया अब राधास्वामी नाम सुधारी १६
कहत म महिमा राधास्वामी हारी, करी मैं आरत राधास्वामी सारी ॥१७॥

शब्द १८३ (सा० व०)

झुगनिया चढ़ी गगन के पार, सुनी राधास्वामी धूम अपार ॥१॥
लगनियाँ मगन हुई दस द्वार, दगनिया मारी राधास्वामी झाड़ ॥२
सुघनियाँ सूँघत मलै निहार, नाम राधास्वामी पाया सार ॥३॥
सुजनियाँ लखी शब्द की धार, राधास्वामी गावत राग मलार ॥४॥
वैरागिन भई लो सुरत हमार, चरन राधास्वामी मोर अधार ॥५

सुहागन चली नाम की लार, लई राधास्वामी सेज सँवार ॥६॥
पिया घर पहुँची मौज निहार, हुई राधास्वामी के बलिहार ॥७॥
जाय जहाँ देखी लीला सार, राधास्वामी चरन पखार पखार ॥८॥
गई और झाँकी खिड़की पार, राधास्वामी रूप किया दीदार ॥९॥
हुए अब उलटी करत जुहार, राधास्वामी परसे तज हंकार ॥१०॥
गये अब मन के सभी विकार, दई अस राधास्वामी दृष्टी डार ॥११॥
कामना रही न अब संसार, राधास्वामी दीन्हा संसे टार ॥१२॥
जुक्ति से डारा मन को मार, चलाई राधास्वामी पैनी धार ॥१३॥

मिरगनी भागी बन से हार, राधास्वामी छोड़ा बान सम्हार ॥१४॥
कहूँ क्या देखी अजब बहार, दिखाया राधास्वामी इक गुलज़ार १५
शब्द गुल खिल गये वार और पार, लगा राधास्वामी से अब प्यार ॥१६॥
घोर जहाँ अनहद उठत अपार, सुरत राधास्वामी दई सुधार ॥१७

शब्द १८४ (प्रे० बा० २)

सुरतिया अधर चढ़ी धर सतगुरु रूप धियान ॥१॥
भाव सम्हार संग गुरु कीन्हा, सुने बचन निज आन ॥२॥
राधास्वामी महिमा अगम अपारा, सुरत शब्द का पाया ज्ञान ॥३॥

ले उपदेश किया अभ्यासा, सतगुरु रूप करी पहिचान ॥४॥
प्रेम भक्ति हिरदे में जागी, गुरु चरनन में रही लिपटान ॥५॥
दरशन करत ताक गुरु नैना, बचन सुनत चढ़ अधर ठिकान ॥६॥
पियत सार रस हुई मतवाली, झूठा लगा जहान ॥७॥
सतगुरु रंग रँगी सुत बिरहन, मन माया दोउ वार रहान ॥८॥
नित्त बिलास करे घट अंतर, सहज सहज सुत अधर चढ़ान ॥९॥
सतगुरु रूप संग ले चालत, काल करम की कुछ न बसान ॥१०॥
दरशन पाय रहत मगनानी, वारत तन मन जान और प्रान ॥११॥

सतगुरु रूप लगा अति प्यारा, जस कामी को कामिन जान ॥१२॥
मीन रहे जस जल आधारा, पपिहा को जस स्वाँत समान ॥१३॥
ऐसी प्रीत बढ़ी गुरु चरनन, को उसका कर सके बखान ॥१४॥
मन और सुरत चढ़े गगनापुर, वहाँ से सतपुर जाय बसान ॥१५॥
सत्त पुरुष से ले दुरबीना, धाम अनामी पहुँची आन ॥१६॥
मगन हुई निज घर में आई, राधास्वामी दरस पाय त्रिसान ॥१७॥

शब्द १८५ (मे० धा० ३)

राधास्वामी सतगुरु पूरे, मैं आया सरन हजूरे ॥१॥

मैं औगुन हारा भारी, तुम बख़्शो भूल हमारी ॥२॥
मैं जग में बहु भरमाया, कहीं घर का पता न पाया ॥३॥
तुम कीनी दात अपारी, निज घर का भेद दियारी ॥४॥
सुत शब्द जुगत समझाई, सुमिरन और ध्यान बताई ॥५॥
जो करे कमाई हित से, और बचन सुने जो चित से ॥६॥
वह छिन छिन घट में धावे, और शब्द अमी रस पावे ॥७॥
गुरु मेरा भाग जगाया, मन सूरत शब्द लगाया ॥८॥
अब मन में रहूँ मगन में, शब्दारस पिऊँ अपन में ॥९॥

गुरु बचन लगें मोहिं प्यारे, सुन सुन हुआ जग से न्यारे ॥१०॥
मेरे औगुन चित न बिचारे, गुरु कीनी दात अपारे ॥११॥
सतसंगत में जब रलिया, गुरु प्रेमी जन सँग मिलिया ॥१२॥
गुरु भक्ती रीत पहिचानी. निश्चय कर मन में मानी ॥१३॥
सोई जन है बड़ भागी, जिन हिरदे भक्ती जागी ॥१४॥
राधास्वामी से करूँ पुकारी, मोहिं दीजे भक्ति करारी ॥१५॥
नित सुरत शब्द में भरना, चित रहे तुम्हारे चरना ॥१६॥
माया से लेव बचाई, राधास्वामी नाम धियाई ॥१७॥

गुरु आरत निसदिन गाऊँ, राधास्वामी चरन समाऊँ ॥१८॥

शब्द १८६ (प्रे० बा० १)

सुरत पियारी उमगत आई, गुरु दर्शन कर अति हरखाई ॥१॥
प्रेम सहित सुनती गुरु बचना, मन माया अंग छिन छिन तजना ॥२
गुरु सँग प्रीत करी उन गहिरी, सुरत निरत हुई चरनन चेरी ॥३॥
हिये बिच उठी अभिलाखा भारी, आरत सतगुरु करूँ सँवारी ॥४॥
हिये अनुराग थाल कर लाई, बिरह प्रेम की जोत जगाई ॥५॥
सुन्दर बस्त्र प्रीत कर साजे, उमँग नवीन हिये में राजे ॥६॥

भोग सुधा रस आन धराई, हरख हरख गुरु आरत गाई ॥७॥
अति कर प्रेम भाव हिये परखा, दया दृष्टि से सतगुरु निरखा ॥८॥
चरन भेद दे सुरत चढ़ाई, करम भरम सब दूर पराई ॥९॥
मेहर हुई निज भाग जगाये, घट मैं दरशन सतगुरु पायें ॥१०॥
आँख खुली तब निज कर देखा, जगजीवन का जस है लेखा ॥११॥
कोइ मूरत मंदिर मैं अटके, कोइ तीरथ कोउ वरत मैं भटके ॥१२॥
देवी देवा पत्थर पानी, राम कृष्ण मैं रहे भुलानी ॥१३॥
निज घर का कोइ भेद न पाया, बिन सतगुरु सब धोखा खाया ॥१४

कस कस भाग सराहूँ अपना, सतगुरु ने मोहिँ किया निज अपना ॥१५॥
दया करी मोहिँ गोद बिठाया, सुरत शब्द मारग दरसाया ॥१६॥
चरन सरन मोहिँ दृढ़ कर दीन्ही, मेरी सुरत करी परवीनी ॥१७॥
नित नित प्रीत प्रतीत बढ़ाई, संशय कोटि अब दीन उड़ाई ॥१८॥
परम गुरू राधास्वामी प्यारे, अपनी दया से मोहिँ लीन उबारे ॥१९

शब्द १८७ (प्रे० बा० ४)

प्रेम गुरु रहा हिये में छाय, सुरत अब नई नई उमँग जगाय ॥१॥
चहत नित सतगुरु का सतसँग, सुरत मन भीज रहे गुरु रँग ॥२

वचन सुन होत मगन मन सूर, करम और भरम किये सब दूर ॥३॥
निरखती मन इन्द्री की चाल, करन चाहे दूतन को पामाल ॥४॥
निरख कर भागत गुरु का ढंग, परख कर झाड़त माया रंग ॥५॥
जगत का परखत फीका रंग, समझ कर त्यागत सबही कुसंग ॥६॥
चरन गुरु हर दम याद बढ़ाय, रूप गुरु रखती हिये बसाय ॥७॥
काल रहा डारत विघन अनेक, काट रहा धर सतगुरु की टेक ॥८॥
गढ़त मेरी राधास्वामी करते आप, दया का अपने धर कर हाथ ॥९॥
पिता प्यारे राधास्वामी दीन दयाल, अनेक विधि कर रहे मेरी सम्हाल ॥१०॥

गाऊँ क्या महिमाँ उनकी सार, दई मोहि चरन सरन कर प्यार ११
बिना राधास्वामी और न कोय, लेइ जो मन मलीन को धोय ॥१२
अबल मैं कस उन गुन गाऊँ, चरन पर नित बल बल जाऊँ ॥१३॥
भरोसा मेहर का हियरे धार, जिऊँ मैं राधास्वामी नाम अधार १४
तड़प दरशन की उठत हरबार, बिबस मैं बैठ रहूँ मन मार ॥१५॥
चरन गहि अंतर में धाऊँ, दरस राधास्वामी वहाँ पाऊँ ॥१६॥
करो प्यारे राधास्वामी ऐसी मेहर, सुरत मन चरनन में रहे ठहर १७
पाऊँ रस घट में नित्त नवीन, केल करूँ धुन सँग जस जल मीन १८

गाऊँ नित आरत प्रेम भरी, सुरत रहे राधास्वामी चरन अड़ी १९
करो प्यारे राधास्वामी मेहर बनाय, लेव सब जीवन चरन लगाय २०
करूँ तुम आरत धर कर प्यार, गायँ नित राधास्वामी नाम दयार ॥२१॥

शब्द १८८ (मे० बा० ४)

राधास्वामी दाता दीनदयाला, दास दासी को लेउ सम्हाला ॥१॥
बहु दिन जग में भटका खाया, मेहर हुई अब चरन लगाया ॥२॥
दया करी तुम दोउ पर भारी, बिरह अगिन चिनगी हिये डारी ॥३
किरपा कर उसको सुलगाओ, बुझने न पावे अस मेहर कराओ ॥४

माया घर सब फूँक जलाओ, मन को निकालो अधर चढ़ाओ ॥५॥
सुरत पड़ी जो इसके बस में, ताहि पहुँचाओ द्वारे दस में ॥६॥
हंस हंसनी सँग करे विलासा, देखे अचरज विमल तमासा ॥७॥
यह मन कच्चा बूझ न लावे, कभी सीधा कभी उलटा धावे ॥८॥
भोगन की जब तरंग उठावे, सतसँग वचन वहीं बिसरावे ॥९॥
अनेक ख़्याल में रहे भरमाई, अनेक काज की चिंता लाई ॥१०॥
बिरह प्रेम तब जाय छिपाई, जग कारज का रूप धराई ॥११॥
भजन ध्यान में रूखा फीका, घट में रस नहिं पावत नेका ॥१२॥

अस हालत जब मन की होई, बेकली और घबराहट होई ॥१३॥
बाढ़े चित में चैन न आवे, तड़प तड़प जिया बहु घबरावे ॥१४॥
अस अस भय मन माहिँ समाई, दया मेहर क्या खिँच गई भाई ॥१५
फिर जब जग कारज हुआ पूरा, झलके प्रेम विघन हुआ दूरा ॥१६॥
गुरु चरनन में प्रीत जगानी, राधास्वामी दया सत्त कर मानी ॥१७
ऐसे झकोले आवें जावें, कभी सूखा कभी प्रेम दिखावें ॥१८॥
इस बिधि मन शांती नहिँ लावे, डिगमिग डिगमिग झोके खावे १९
गहरी दया करो मेरे प्यारे, प्रेम के खोल देउ भंडारे ॥२०॥

निसदिन रहूँ चरन लौ लीना, केल करूँ जस जल सँग मीना ॥२१॥
जग कारज मोहिँ अब न सतावें, चिंता डर मोहिँ नहिँ भरमावें ॥२२॥
प्रेम धार रहे हरदम जारी, धुन सँग सुरत की लागे तारी ॥२३॥
जब चाहूँ तब रस लेउँ भारी, अमी धार सँग भीजूँ सारी ॥२४॥
ऐसी मेहर करो स्वामी प्यारे, शब्दारस घट पाउँ सदारे ॥२५॥
चरन बिना नहिँ और अधारे, हरख हरख गुन गाऊँ तुम्हारे ॥२६॥
जो यह झकोले मौज से आवें, बिरह जगा नशा हज़म करावें ॥२७
तो चरनन मेँ दृढ़ बिस्वासा, देउ छुड़ाओ काल घर बासा ॥२८॥

झोनी याद प्रेम सँग मन में, बनी रहे नहिं भूले छिन में ॥२९॥
राधास्वामी राधास्वामी नित नित गाऊँ, चरन सरन पर बल बल जाऊँ ॥३०॥

शब्द १९८ (रा० व०)

रोम रोम मेरे तुम आधार, रग रग मेरी करत पुकार ॥१॥
अंग अंग मेरा करे गुहार, बंद बंद से करूँ जुहार ॥२॥
हे राधास्वामी अधम उधार, मैं किंकर तुम दीनदयार ॥३॥
इन्द्री मन मेरे भरे विकार, तन भी बँधा जक्त की लार ॥४॥
मैं सब विधि बहता भौ धार, तुमही पार उतारन हार ॥५॥

हे राधास्वामी सुख भंडार, मैं अति दीन फँसा संसार ॥६॥
काढ़ि निकारो मोहिँ दातार, दात तुम्हारी अगम अपार ॥७॥
दया सिंध जीवन आधार, तुम बिन कोइ न सम्हारनहार ॥८॥
हे राधास्वामी सरन तुम्हार, गही आन मैं नीच नकार ॥९॥
सदा रहूँ तुम चरण अधार, कभी न बिछड़ूँ यही पुकार ॥१०॥
निसदिन राखूँ हिये सम्हार, चरन तुम्हार मोर आधार ॥११॥
हे राधास्वामी अपर अपार, मोहिँ दिखाओ निज दरबार ॥१२॥
मम करनी कहीँ करो विचार, तौ मैं ठहरन जोग न द्वार ॥१३॥

तुम गंभीर धीर जग पार, मैं डूबत हूँ भौजल धार ॥१४॥
हे राधास्वामी लगावो किनार, तुम खेवटिया सब से न्यार ॥१५॥
चोर चुगल बरतूँ अहंकार, कपट कुटिलता बड़ा लबार ॥१६॥
काम क्रोध और मोह पियार, क्या क्या बरनूँ भरा विकार ॥१७॥
हे राधास्वामी छिमा सम्हार, लीजे मुझको अभो उबार ॥१८॥
तुम महिमा का वार न पार, शेष गनेश रहे सब हार ॥१९॥
माया ब्रह्म नहीं औतार, कर न सके वह काली धार ॥२०॥
हे राधास्वामी सब के पार, इन सब के तुमही आधार ॥२१॥

मैं तुम चरण जाउँ वलिहार, देख न सकूँ रूप उजियार ॥२२॥
तेज पुंज तुम अगम अपार, चाँद सूर की जहाँ न शुमार ॥२३॥
हे राधास्वामी तुम दीदार, विना मेहर को करे अधार ॥२४॥
राधास्वामी राधास्वामी नाम तुम्हार, यही मेरा कुल और यही परिवार ॥२५॥
राधास्वामी राधास्वामी वारंवार, कहत रहूँ और रहूँ हुशियार ॥२६
हे राधास्वामी मर्म तुम्हार, तुम्हरी दया से पाऊँ सार ॥२७॥
गुरु स्वरूप धर लिया औतार, जीव उवारन आये संसार ॥२८॥
नर स्वरूप धर किया उपकार, तुम सतगुरु मेरे परम उदार ॥२९॥

हे राधास्वामी शब्द दुवार, खोल दिया तुम वज्र किवाड़ ॥३०॥
लीला तुम्हरी अजब बहार, कह न सके कोइ वार न पार ॥३१॥
जिसे दिखाओ सो देखनहार, तुम बिन कोई न परखनहार ॥३२॥
हे राधास्वामी गुरू हमार, तुम बिन कौन करे निरवार ॥३३॥

शब्द १८० (प्रे० बा० ४)

लगे हैं सतगुरु मुझे पियारे, कर उनका सतसँग शब्द धारे।
छुटे हैं मन के बिकार सारे, कहूँ मैं कैसे गुरू की गतियाँ ॥१॥

सुरत शब्द मेँ लगाऊ दम दम, सुनूँ मगन होय धुनोँ की झम झम।
होत सब दूर मन की हम हम, सुने कौन ऐसी वट मेँ बतियाँ ॥२॥

बढ़त प्रेम और प्रीत दिन दिन, होत मन से सुरत भिन भिन।
गावनी गुरु की महिमा छिन छिन, रहत नित गुरु चरन मेँ
रतियाँ ॥३॥

जगत के जीव हैँ अभागी सारे, फिरेँ हैँ मन इन्द्रियोँ के मारे।
जाल से उनको को निकारे, सुने न चित देके संत मतियाँ ॥४॥

जगा है मेरा अपार भागा, चरन मेँ राधास्वामी आन लागा।
गाएँ सब जीव माया रागा, रहे हैँ थक मग मेँ जोगी जतियाँ ॥५॥

शब्द १८१ (प्रे० बा० ४)

होली खेले रँगीली नार, सतगुरु से प्रेम लगाई ॥टेक॥
दीन अधीन रली सतसँग में, घट अनुराग जगाई ।
प्रीत प्रतीत बढ़त चरनन में, दिन दिन भक्ति सवाई ॥
मेहर से काल की अटक तुड़ाई ॥१॥
प्रेम रँग घट भर भर लाई, उमँग उमँग गुरु पै छिड़काई ।
सतसंगिन सतसंगी भाई, सब पै रंग अधिक बरसाई ॥
भीँज भीँज सब अति हरखाई ॥२॥

अबीर गुलाल चहुँ देश उड़ाना, लाल सेत आकाश दिखाना ।
सब के मुख झलकत अब नूरा, बाजत घट घट अनहद तूरा ॥
समाँ बँधा कुछ कहा न जाई ॥३॥
ऐसा अचरज फाग रचाई, जग बिच भारी धूम मचाई ।
मन माया की धूल उड़ाई, काल करम दोउ गये ठगाई ॥
ऐसी दया राधास्वामी कराई ॥४॥
भक्ति रीत हुई अब जारी, प्रेम की घट घट बरखा भारी ।
मोह और काम रहे सब हारी, जीवन का सहज होत उधारी ॥
जग में फिरी राधास्वामी की दुहाई ॥५॥

राधास्वामी नाम हुआ जग परघट, काल करम की मिट गई खट पट ।
मन के मते सब रह गये सट पट, सुरत शब्द कारज करे झट पट ॥
राधास्वामी राधास्वामी सब मिलि गाई ॥६॥
जीव रहे जग सबहि दुखारी, मेहर से सब अब हुए सुखारी ।
राधास्वामी ऐसी दया विचारी, मन माया दोउ बाज़ी हारी ॥
राधास्वामी सब को पार लगाई ॥७॥

शब्द १८२ (प्रे० बा० ४)

जगत जीव सब होली पूजैं, साधू होला गावरी ॥१॥
अबीर गुलाल उड़ावत चालें, प्रेम रंग घट लावैंरी ॥२॥
बिरह अनुराग की धारा भारी, हिय में नित उमँगावैंरी ॥३॥
जो जीव चरन सरन में आवें, उनका भाग जगावैंरी ॥४॥
राधास्वामी चरन धार परतीती, सतगुरु शब्द मनावैंरी ॥५॥
शब्द अभ्यास करत नित घट में, जग देह भाव भुलावैंरी ॥६॥
जग जीवन को दया धार कर, राधास्वामी नाम सुनावैंरी ॥७॥

शब्द १८३ (प्रे० बा० ४)

जा मेरे प्रीतम से प्रीत करे, मोहिँ प्यारा लागेरी ॥१॥
जो मेरे प्रीतम की सेवा धारे, वहि दिन दिन जागेरी ॥२॥
जो मेरे प्रीतम की महिमाँ गावे, मोहिँ अधिक सुहावेरी ॥३॥
जो मेरे प्रीतम के चरनन लागे, वोही जग से भागेरी ॥४॥
जो मेरे प्रीतम का रूप निहारे, वोही छवि ताकेरी ॥५॥
जो मेरे प्रीतम का शब्द सम्हारे, गुरु दर झाँकेरी ॥६॥
जो मेरे प्रीतम की सरन सम्हारे, वहि घर जावेरी ॥७॥

जो मेरे प्रीतम का नाम पुकारे, सोइ निज धाम सिधारेरी ॥८॥
भौजल से जो तरना चाहे, राधास्वामी राधास्वामी गावेरी ॥९॥

शब्द १८४ (मे० बा० ४)

आओरी सखी चलो गुरु के पासा, भक्ति दान आज लीजिये ॥१॥
जीव उबारन सतगुरु आये, सतसँग उनका कीजिये ॥२॥
प्रीत प्रतीत धार चरनन में, तन मन भैंट धरीजिये ॥३॥
दृष्टि जोड़ उन दर्शन करना, चित दे वचन सुनीजिये ॥४॥
वचन कहो चाहे अमृत धारा, उमँग उमँग घट पीजिये । ५॥

सुन सुन बचन खिलत घट मनुआँ, हियरे उमँग भरीजिये ॥६॥
कूड़ देख जग का परमारथ, करम धरम तज दीजिये ॥७॥
सुरत शब्द का ले उपदेशा, घट मैँ बिलास करीजिये ॥८॥
अधर चढ़त सुत हुई मगनानी, मनुआँ धुन सँग रीझिये ॥९॥
भक्ति महातम महिमाँ जानी, प्रेम रंग घट भीजिये ॥१०॥
समरथ सतगुरु राधास्वामी पाये, सीस चरन मैँ दीजिये ॥११॥

॥ इति ॥